न रा
का स
उपक्रम-1 दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

वर्ष 12, अंक 18
जनवरी–दिसम्बर, 2023

हिन्दी विश्व की महानतम भाषा है।
– राहुल सांकृत्यायन –

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली
अध्यक्षता: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम-1) दिल्ली की 57वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की 57वीं बैठक एवं राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन संबंधी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन 10 अगस्त, 2023 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अधिकारी संस्थान, सफदरजंग हवाईअड्डा, नई दिल्ली में किया गया। बैठक की अध्यक्षता भाविप्रा एवं नराकास (उपक्रम–1) के अध्यक्ष श्री संजीव कुमार, भा. प्र. से. द्वारा की गई एवं इस अवसर पर सदस्य (मानव संसाधन) डा. एच श्रीनिवास भी उपस्थित थे। इस बैठक में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी सदस्य कार्यालयों से कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान, सदस्य कार्यालयों द्वारा जनवरी–जून 2023 अवधि के दौरान किए गए राजभाषा कार्यान्वयन के आधार पर 08 सदस्य कार्यालयों को श्रेष्ठ कार्यान्वयन पुरस्कार प्रदान किए गए। सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों से प्राप्त जनवरी–जून 2023 अवधि की हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई एवं सभी सदस्य कार्यालयों को हिन्दी और उसकी उपयोगिता एवं प्रयोगिकता पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को हिन्दी के बहुआयामी उपयोग के लिए प्रेरित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

अंकः 18 **जनवरी–दिसम्बर, 2023**

मुख्य संरक्षक

संजीव कुमार, भा.प्र.से.
अध्यक्ष

संरक्षक

डॉ एच श्रीनिवास
सदस्य (मानव संसाधन)

मार्गदर्शन

एस. स्वामीनाथन
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)

प्रबंध संपादक

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास

सह–संपादक

चन्द्रकला मिश्रा
अपर महाप्रबंधक (राजभाषा)–बी एच ई एल

विशेष योगदान

रीता अरूण मलिक
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की ओर से
आंतरिक वितरण के लिए प्रकाशित

'इंद्रप्रस्थ स्वर' में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

इस अंक में

मुख्य संरक्षक की कलम से	02
संरक्षक की कलम से	03
मार्गदर्शन	04
प्रबंध संपादक की कलम से	05
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम –1), दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताएं	06
''कलम''	12
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के तत्वावधान में 25.05.2023 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम	13
अमरत्व	14
''मानव बनाम दानव''	16
''अपने लिए जिए तो क्या जिए''	17
''कई रंग जिन्दगी के''	18
सत्यनिष्ठा	19
विश्वपटल पर भारत की स्थिति	21
निःस्वार्थ प्रेम और समर्पण	23
''यादें बचपन की''	24
उद्योग 4.0	25
अनामिका	29
''कवि बहुत लाचार हूँ मैं''	31
आम का पौधा	32
''जल संरक्षण''	34
''बरसाती कुकुर''	35
आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना	36
''शहर''	37
बदलाव	38
''जाने क्यूँ सब सहती है''	41
''न ठहर बस बढ़ता चल''	42
''लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया''	42
गंगा महिमा	43
''बाप रे''	44
''व्यथा हिंदी की''	45
''हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा''	46
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण	47

संजीव कुमार, भा.प्र.से.
SANJEEV KUMAR, IAS
अध्यक्ष
Chairman
दूरभाष / Phone : 011-24632930
24622796
फैक्स / Fax : 011-20818201
ई–मेल / E-mail : chairman@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गाँधी भवन
Rajiv Gandhi Bhawan
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003
Safdarjung Airport, New Delhi-110003

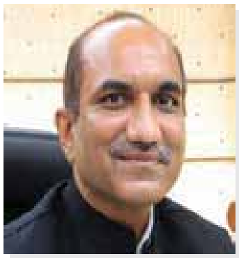

मुख्य संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नराकास (उपक्रम–1) की गृह पत्रिका ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' के 18वें संस्करण को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि यह रचनाकारों की सृजनात्मक प्रतिभा का प्रमाण है।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा देश के विभिन्न नगरों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। हमारे सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यह पत्रिका उनके सक्रिय योगदान का एक सुंदर उदाहरण है।

नराकास एक ऐसा मंच है जहाँ सदस्य कार्यालयों के कार्य स्वरूप की विविधता होने पर भी सभी मिलकर राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास कर रहे हैं। इसी दिशा में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली द्वारा अपने स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों में से हिन्दी पत्रिका ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' का प्रकाशन एक अत्यंत ही सराहनीय कार्य है।

पत्रिका में प्रकाशित सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा रचित लेख राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की एक कलात्मक झलक प्रस्तुत करते हैं। इस पत्रिका में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का जो अवसर प्राप्त होता है उससे राजभाषा में कार्य करने हेतु एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है। जिससें अन्य कार्मिक भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' के इस अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों द्वारा सभी पाठक लाभान्वित होंगे और राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन के प्रति और अधिक सजग होंगे।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित,

संजीव कुमार

(संजीव कुमार)

डॉ. एच. श्रीनिवास, भारेकासे
Dr. H. Srinivas, IRPS
सदस्य (मानव संसाधन)
Member (Human Resource)
कार्यालय/Office : 91-11-24632946, 20818202
ई-मेल/E-mail : memberhr@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, ‘सी’ ब्लॉक
Rajiv Gandhi Bhawan, ‘C’ Block
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की पत्रिका ‘‘इंद्रप्रस्थ स्वर’’ का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिए सभी सदस्य कार्यालय बधाई के पात्र हैं।

प्राचीन काल से ही हिन्दी देशभर में संवाद की प्रमुख भाषा रही है। किसी भी देश में राजभाषा का सम्मान उसी भाषा को प्राप्त होता है जो देश में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली–समझी जाती हो। यह सर्वविदित है कि विविधताओं से भरे इस देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी ने महती भूमिका का निर्वाह किया है। हिन्दी भाषा की इन्हीं विशेषताओं के कारण स्वतन्त्रता के पश्चात हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसलिए हम सभी का कर्तव्य है कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु अपना योगदान दें।

इसी क्रम में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की गृहपत्रिका ‘‘इंद्रप्रस्थ स्वर’’ न केवल राजभाषा के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हेतु प्रयासरत है अपितु यह सदस्य कार्यालयों को अपनी भाषा और संस्कृति को समृद्ध बनाए रखने के लिए एक उपयोगी मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के राजभाषा के प्रति अनुराग का प्रतीक है। पत्रिका में सम्मिलित लेख सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की रचनाधर्मिता को प्रतिबिम्बित करते हैं साथ ही कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन में सकारात्मक वातावरण को भी प्रस्तुत करते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सदस्य कार्यालयों के रचनाकार भविष्य में भी अपनी सृजन प्रतिभा इसी प्रकार से प्रस्तुत करते रहेंगे। हम सभी के सामूहिक रचनात्मक प्रयासों से यह पत्रिका राजभाषा संबंधी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेगी और राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगी।

सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ,

एच श्रीनिवास

(डॉ. एच. श्रीनिवास)

एस. स्वामीनाथन
S. Swaminathan
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)
Executive Director (Administration)
कार्यालय/Office : 91-11-20818221
मोबाईल/Mob. : 91-7669945888
ई-मेल/E-mail : edadmin@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, ए-ब्लॉक, कमरा न. 22
Rajiv Gandhi Bhawan, A-Block, Room No. 22
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

मार्गदर्शन

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम –1), दिल्ली द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर वृद्धि करते हुए ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' पत्रिका का 18वां अंक प्रकाशित किया गया है।

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है और यही कारण है कि भाषा किसी भी समाज के सांस्कृतिक विकास की प्रेरक शक्ति के रूप में अपना प्रभाव छोड़ती है और भाषा का यही विकास समाज की संस्कृति के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है। राजभाषा हिन्दी ने संस्कृति के विस्तार में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया है। यही कारण हो सकता है कि आज विश्व के अनेक देश हिन्दी भाषा के प्रति आदर का भाव रखते हैं।

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली द्वारा पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा के विकास क्रम को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से यह पता चलता है कि सभी कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिन्दी में समग्र रूप से कार्य करने के कारण राजभाषा हिन्दी के कार्यालयीन प्रयोग को नित नए आयाम मिल रहे हैं।

मेरा यह मानना है कि सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी से ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' पत्रिका इसी प्रकार अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेगी। साथ ही हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

इसी कामना के साथ सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

एस. स्वामीनाथन

एस. स्वामीनाथन

प्रबंध संपादक की कलम से

"इंद्रप्रस्थ स्वर" का वर्ष 2023 का अंक 18 आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली की प्रतिनिधि पत्रिका के इस अंक में जहां एक ओर समसामयिक विषयों पर लेख प्रकाशित किए गए हैं वही दूसरी ओर हृदय स्पर्शी मानव संवेदनाओ को दर्शाती मौलिक रचनाओं को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि राजभाषा के संवैधानिक उपबंधों के अनुपालन एवं कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी कार्यशाला, राजभाषा प्रशिक्षण, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।

इसका मूल उदेश्य यह है कि कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों द्वारा राजभाषा हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाए और उनकी राजभाषा में चिंतन की मौलिक प्रतिभा को निखारा जाए। कार्मिकों की मौलिक प्रतिभा प्रोत्साहित करने हेतु नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली द्वारा गृहपत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" प्रकाशित की जा रही है।

यह पत्रिका केवल राजभाषा हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार का एक माध्यम मात्र ही नहीं है अपितु यह दैनिक कार्य को पूर्ण करते हुए भी सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा अपने भीतर छिपे लेखक, पाठक और कवि को कलमबद्ध करने के प्रयास का मंच भी है। मोबाइल के इस युग में रचनात्मक कार्यों में रूचि दिखाते हुए अपने विचारों को शब्दों में उकेरना एक बहुत कठिन कार्य है, ऐसे में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के रचनाकार बधाई के पात्र हैं। मेरा यह विश्वास है कि उक्त रचनाकार अपने विषय क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का अधिकतम प्रयोग कर रहे हैं और अपने–अपने कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

मुझे यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा के दायित्वों के प्रति जागरूक हैं। उनके सहयोग से विगत वर्ष में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के तत्वावधान में अनेक गतिविधियों का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया जिससे सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिक लाभान्वित हुए। इस वर्ष में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी से वर्ष के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया जिसके लिए सभी सदस्य कार्यालयों का हम धन्यवाद ज्ञापित करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी रचनाकारों से रचनाएँ प्राप्त होती रहेंगी।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित,

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)
एवं सदस्य–सचिव, नराकास(उपक्रम–1) दिल्ली

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम -1), दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताएं

अक्टूबर–दिसंबर, 2023 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने और कार्मिकों के बीच राजभाषा हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु 13 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रतिभागिता दर्ज की गयी। आयोजित प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँः–

1. हिन्दी टिप्पण लेखन

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में रेलटेल कार्पोरेशन इंडिया लिमिटेड द्वारा 30 अक्तूबर, 2023 को 'हिंदी टिप्पण लेखन' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं समूह महाप्रबंधक (प्रशासन एवं सुरक्षा) श्रीमती रुचिरा चटर्जी ने प्रतियोगिता के आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा हिंदी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपने–अपने उपक्रमों में उत्साह के साथ राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता आयोजन में उप निदेशक (राजभाषा) श्री के.पी. शर्मा जी एवं नराकास उपक्रम–1 के सदस्य सचिव श्री संजीव कुमार जी उपस्थित थे।

2. हिन्दी व्याकरण

एनटीपीसी द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के लिए 'हिंदी व्याकरण' प्रतियोगिता 03 नवंबर, 2023 को आयोजित की गई।

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री सी. कुमार ने संबोधित करते हुए कहा कि नराकास एक ऐसा मंच है, जिसके माध्यम से सामूहिक रूप से सदस्य कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास एवं पहलें की जाती हैं, जिससे कि राजभाषा नीति का समुचित अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री अतरसिंह गौतम ने प्रतियोगिता के आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डाला और उपस्थितों का स्वागत किया। इस प्रतियोगिता में भारत सरकार के 19 उपक्रमों के प्रतिभागियों ने सहभागिता की और आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

3. राजभाषा प्रश्नमंच

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में गेल इंडिया लिमिटेड द्वारा 08 नवंबर, 2023 को 'राजभाषा प्रश्नमंच' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री सुनील कुमार मीणा, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने प्रतियोगिता के आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए सभी अथितियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रतियोगिता आयोजन में उप निदेशक (राजभाषा) श्री के.पी. शर्मा जी एवं नराकास उपक्रम–1 के सदस्य सचिव श्री संजीव कुमार जी उपस्थित थे।

4. हिन्दी कविता पाठ

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड निगमित मुख्यालय द्वारा 17 नवम्बर, 2023 को 'हिंदी कविता पाठ' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। इस अवसर पर जाने माने कवि श्री प्रदीप गुप्ता एवं नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव श्री संजीव कुमार, निर्णायक मण्डल में उपस्थित थे। प्रतियोगिता का आयोजन पूर्ण रूप से सफल रहा और प्रतिभागियों में से कई नए कवि सामने उभर के आए।

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता
17.11.2023

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1), दिल्ली
हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता
17.11.2023
आयोजक
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड

5. हिन्दी निबंध लेखन

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में हिंदुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा 20 नवंबर, 2023 को 'हिंदी निबंध लेखन' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सुश्री अनीता अरोड़ा वरिष्ठ गोपनीय सचिव हिंदुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा सभी प्रतिनिधियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। श्री संजय कुमार सिंह, उपमहाप्रबंधक राजभाषा द्वारा पर्यवेक्षक का कार्य किया गया वही श्री हेमंत धमीजा उप महाप्रबंधक (रीटेल) द्वारा प्रतियोगिता को आरंभ किया गया। सभी प्रतिनिधियों ने अपने वक्तव्य द्वारा नराकास उपक्रम–1 द्वारा आयोजित की जा रही प्रतियोगिताओं और उनके महत्व पर प्रकाश डाला।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
निबंध प्रतियोगिता

निबंध प्रतियोगिता
हार्दिक अभिनन्दन

6. हिन्दी आशु भाषण

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा 21 नवंबर, 2023 को 'हिन्दी आशु भाषण' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में लगभग 16 प्रतिभागियों ने विभिन्न समसामयिक विषयों पर रोचक प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता बहुत ही उत्साह और उमंग के साथ सम्पन्न हुई। इस अवसर पर डॉ वेद प्रकाश गौड़ पूर्व निदेशक संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री संजीव कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) भाविप्रा एवं नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव मुख्य अतिथि एवं निर्णायक के रूप में उपस्थित रहे।

7. अंग्रेजी–हिन्दी अनुवाद

इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड
हिन्दी
अनुवाद प्रतियोगिता

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड द्वारा 22 नवंबर, 2023 को 'अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का उदघाटन सुश्री गोपा स्वेन, समूह महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री संजीव कुमार, नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव, श्री राजेश डाडेल, वरिष्ठ महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा) एवं श्री नगेन्द्र मिश्र, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। सुश्री गोपा स्वेन ने स्वागत भाषण में देश की विभिन्न भाषाओं के बीच हिन्दी को देश को एक सूत्र में पिरोने वाली कड़ी बताते हुए उसके प्रचार एवं प्रसार को संवैधानिक जिम्मेदारी न समझने अपितु नैतिक दायित्व मानकर हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया। प्रतियोगिता के अंत में श्री नगेन्द्र मिश्र उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों को प्रतियोगिता को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी
अनुवाद प्रतियोगिता

8. रचनात्मक समाचार वाचन

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में एमएमटीसी कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा 23 नवंबर, 2023 को 'रचनात्मक समाचार वाचन' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में सभी सदस्य कार्यालयों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता बहुत ही उत्साह और उमंग के साथ सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) भाविप्रा एवं नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव मुख्य अतिथि एवं निर्णायक के रूप में उपस्थित रहें।

9. हिन्दी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में बीएचईएल निगमित कार्यालय द्वारा 29 नवंबर, 2023 को 'हिंदी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री कुमार राधारमण, सहायक निदेशक (राजभाषा), भारी उद्योग मंत्रालय और श्री हरीश कुमार, महाप्रबंधक (पीजी, बीओपी एवं वीडी), बीएचईएल, प्रोजेक्ट इंजीनियरिंग मैनेजमेंट को निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता में कुल 07 राउंड हुए जिनमें प्रशासनिक शब्दावली, हिन्दी गानों, दोहों आदि के संबंध में प्रश्न पूछे गए। लीक से हटकर आयोजित की गई इस प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और निर्णायक मंडल द्वारा इसे रोचक बताया गया।

भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
कॉर्पोरेट कार्यालय

10. हिन्दी संस्मरण लेखन

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा 29 नवम्बर, 2023 को 'हिंदी संस्मरण लेखन' प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के विभिन्न सदस्य उपक्रमों से प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं अपने अनुभवों को कलमबद्ध किया। श्री एस के त्रिपाठी, राजभाषा अधिकारी, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक लिमिटेड एवं सुश्री रीता अरुण मलिक, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) भाविप्रा द्वारा निर्णायक पद ग्रहण किया गया। श्री त्रिपाठी ने हिन्दी के महत्व को बताते हुए सभी प्रतिभागियों के हिन्दी से प्रेम की सराहना की और हिन्दी के प्रचार प्रसार में हमेशा योगदान देते रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपने–अपने संस्थानों का प्रतिनिधि बताते हुए उन्हें हिन्दी का अम्बेस्डर कहकर उनका उत्साहवर्धन किया।

हिंदी संस्मरण प्रतियोगिता

11. हिन्दी प्रतिवेदन लेखन

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में इरकॉन निगमित कार्यालय साकेत नई दिल्ली द्वारा 30 नवंबर, 2023 को 'हिन्दी प्रतिवेदन लेखन' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में लगभग 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आयोजित की गई प्रतियोगिता में दो विषयों पर प्रतिवेदन लिखनी थी और यह प्रतियोगिता एक घंटे की थी। निर्णायकगण के रूप में श्री प्रेम सिंह (सेवानिवृत्त) विज्ञान एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा), समूह महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री संजीव कुमार, नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव एवं श्री नीरज गुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक (यांत्रिक) को भी आमंत्रित किया गया।

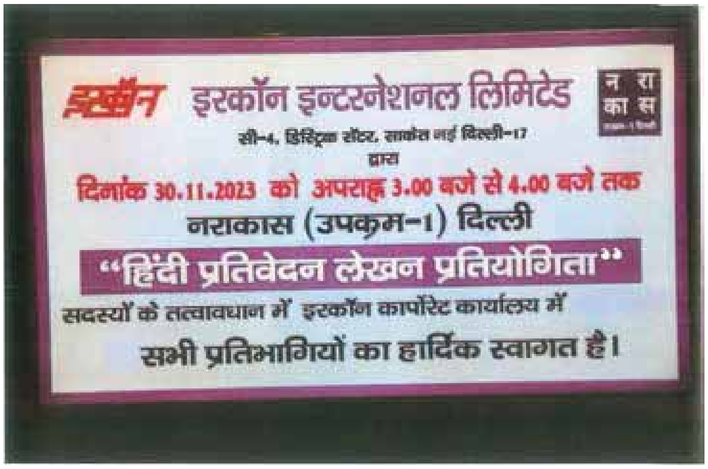

इरकॉन इन्टरनेशनल लिमिटेड
सी–4, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, साकेत नई दिल्ली–17
द्वारा
दिनांक 30.11.2023 को अपराह्न 3.00 बजे से 4.00 बजे तक
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली
"हिंदी प्रतिवेदन लेखन प्रतियोगिता"
सदस्यों के तत्वावधान में इरकॉन कार्पोरेट कार्यालय में
सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत है।

12. हिन्दी शब्दार्थ लिखित

30 नवंबर, 2023

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा 30 नवंबर, 2023 को 'हिन्दी शब्दार्थ लिखित' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में सभी सदस्य कार्यालयों से प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं अपने शब्द ज्ञान का विस्तार किया। इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) भाविप्रा एवं नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य सचिव मुख्य अतिथि एवं निर्णायक के रूप में उपस्थित रहे।

13. चित्र अभिव्यक्ति

04 दिसम्बर, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम– I), दिल्ली के तत्वावधान में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) द्वारा 'चित्र अभिव्यक्ति लिखित' प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में विभिन्न उपक्रमों से कुल 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सबसे पहले सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा सुश्री माला घोष चौधुरी, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा सहित विशेषज्ञा श्रीमती चन्द्र कला मिश्र, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–राजभाषा) का स्वागत पुष्पगुच्छ द्वारा किया गया। इसके उपरांत प्रतियोगिता का शुभारंभ महाप्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा तथा विशेषज्ञा द्वारा दीप प्रज्जवलित कर और सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु शुभकामनाएं देकर किया गया।

चित्र अभिव्यक्ति लिखित प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा सभी प्रतिभागियों द्वारा प्रतियोगिता के आयोजन की प्रशंसा की गई। इसके उपरांत विशेषज्ञा द्वारा भी इस प्रतियोगिता के आयोजन की सराहना की गई।

"कलम"

वह आशिक के वेश में एक कवि आया था,
मेरे दिल का मोल उसने कलम से लगाया था।

मैं जोड़ता रहा भावनाएँ उससे, उसने इन,
भावनाओं से कविताओं का महल बनवाया था।

मैं दिल लेके बैठा, वो कागज अपने साथ लाया था,
मैंने उसकी कविताओं का मोल अपने आंसुओ से चुकाया था।

प्रवेश कुमार
वरिष्ठ सहायक
एनएसएफडीसी

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के तत्वावधान में 25.05.2023 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 25.05.2023 को सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संवर्ग/राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यपालकों के लिए **''हिन्दी तकनीक के नए आयाम''** विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित श्री बालेंदु शर्मा दाधीच का शॉल एवं पुस्तक से स्वागत किया गया। भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में चर्चित व्यक्तित्व श्री बालेंदु शर्मा दाधीच द्वारा माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित आधुनिकतम हिन्दी तकनीकों जैसे टेक्स्ट इनपुट, स्थानीयकरण, हिन्दी मशीन अनुवाद, ध्वनि से पाठ और पाठ से ध्वनि, स्पर्श टाइपिंग शिक्षक, संशोधक यूनिकोड वर्तनी संशोधक, वर्चुअल हिन्दी टाइपराइटर, चित्र आकार परिवर्तक आदि अनेक तकनीकों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के सदस्य सचिव श्री संजीव कुमार द्वारा किया गया।

व्याख्यानों के उपरांत प्रश्नोत्तर सत्र रखा गया था कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों से फीडबैक भी लिए गए। प्रतिभागियों द्वारा इस कार्यक्रम को बहुत ही प्रभावशाली एवं उपयोगी बताया गया साथ ही भविष्य में संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली पर भी व्याख्यान आदि आयोजित करने के सुझाव भी प्राप्त हुए। सदस्य कार्यालयों के उपस्थित प्रतिभागियों के सहयोग से कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

अमरत्व

जब विक्रम ने बैताल को पेड़ से नीचे उतारा तो उसने पाया बैताल मुस्कुरा रहा था, विक्रम की आंखों में आंखें झांके। यह एक शरारत भरी मुस्कुराहट थी, जो कह रही थी. 'आ गया बच्चू, पर मैं भी मैं हूं, ऐसी कहानी सुनाऊंगा कि तू बोले बिना रह नहीं पाएगा। विक्रम ने उसे कंधे पर रखा ही था कि वह शुरु हो गया।

“एक बार कनकपुरी नगरी में देवस्वामी नाम का ब्राह्मण रहता था। उसके दो बुद्धिमान पुत्र थे वर्ष और उपवर्ष। वर्ष को कला, संगीत, आदि में रुचि थी तो उपवर्ष को आध्यात्मिक एवं धार्मिक विषयों में। देवस्वामी ने दोनों को यथेष्ट शिक्षा दिलवाई। जब दोनों भाईयों की शिक्षा–दीक्षा सम्पन्न हुई तो उन्होंने अपने–अपने कार्य क्षेत्र तय किए। वर्ष ने स्वयं को रंगमंच और साहित्य को समर्पित किया तो उपवर्ष आध्यात्म की ओर मुड़ा। हम कौन हैं, क्या हैं, जीवन का उद्देश्य क्या है, सही मार्ग क्या है, जैसे हजारों सवाल उपवर्ष के दिमाग में थे, जिनके हल ढूंढने वह निकल पड़ा।”

“सालों तक वह नगरों, ग्रामों राज्यों में भटकता रहा, पर्वत श्रृंखलाओं में घूमा, अनेक नदियां पार की, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्मगुरुओं के साथ दिन गुजारे। कभी ध्यान लगाकर बैठा तो कभी अन्न–जल का त्याग किया। कुछ प्रश्नों के उत्तर मिले तो कुछ नए प्रश्न खड़े हुए। कई नए मित्र बने तो कई बिछुड़े पर न उसकी जिज्ञासा ने उसका साथ छोड़ा, न वह किसी एक जगह टिक पाया। वह एक ठेठ यायावर था। हर नगर उसका था, सारी धरती उसकी थी।

“इस तरह भटकते–भटकते बीस बरस गुजर गए। एक दिन वह हिमालय पर्वत में सिंधु नदी के उद्‌गम की ओर जा रहा था कि उसे मार्ग में एक विचित्र सा पौधा दिखा। उस पौधे में एक छोटा सा फल लगा हुआ था। पौधे में कुछ ऐसा आकर्षण था कि वह उसकी ओर खिंचा चला आया। उसे पता ही नहीं चला कब उसने वह फल खा लिया। फल को खाना था कि उसका सिर घूमने लगा और वह बेहोश हो गया।”

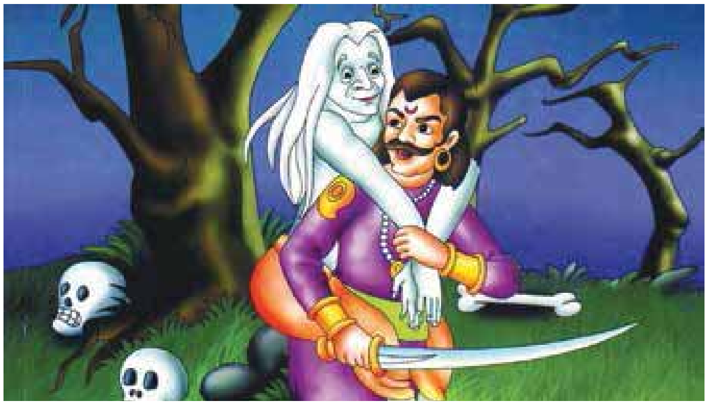

“जब उसकी मूर्छा टूटी तो उसने पाया वह एक गुफा में लेटा है और उसके बगल में एक तेजोमय बूढ़ा बैठा हुआ है। उसने बूढ़े को प्रणाम किया और जानना चाहा कि वह इस समय कहां है। उत्तर में बूढ़ा मुस्कुराया और उसने पूछा, 'पहले यह बताओ क्या तुमने वह फल खाया है?' 'खाया तो है, परन्तु वह क्या था मैं नहीं जानता। मैं तो उसे खाते ही बेहोश हो गया। क्या आप बता सकते हैं, मैं कितने समय बेहोश रहा?' 'तुम्हें तीन दिन पूरे हो चुके हैं पुत्र।' 'तीन दिन! बाप रे!' उपवर्ष घबरा गया, 'आपका बहुत बहुत धन्यवाद, जो आप मुझे यहां ले आए वरना मैं तो ठंड से मर जाता।” नहीं पुत्र अगर मैं नहीं आता तो नहीं मरते। 'क्यों?' 'क्योंकि तुम्हें ठंड मार नहीं सकती। ठंड तो क्या तुम्हें कोई भी 'अर्थात'? “अर्थात यह कि तुमने जो फल खाया था, वह अमर फल है। अब तुम अमर हो चुके हो। सर्दी, गर्मी, आँधी तूफान आदि तुम्हें कुछ समय के लिए बीमार तो कर सकते हैं, पर तुम्हें मार नहीं सकते। मेरे अलावा इस धरती के तुम वह दूसरे प्राणी हो जिसने यह फल देखा है और खाया है।”

“उत्तर सुनकर उपवर्ष अचकचा सा गया। उसे समझ नहीं आया कि वह क्या कहे, क्या करे? उसके सामने एक इंसान खड़ा था, जो कहता था कि वह अमर है और अब उपवर्ष भी अमर हो चुका है। यह अविश्वसनीय था पर इसे झुठलाना या सिद्ध करना संभव नहीं था। ऊपर से बूढ़े के चेहरे का तेज उसे अविश्वास नहीं करने देता था। वह सोचने लगा अगर बूढ़े की बात सच है तो इसका मतलब है कि वह अमर हो चुका है। यह सोचते ही उपवर्ष की कंपकंपी छूट गई और अचानक उसे अपना भाई याद आ गया।

“भाई से मिलने की इच्छा ने कुछ यूं जोर पकड़ा कि उपवर्ष अपने नए साथी को जल्द वापस आने का वायदा कर कनकपुरी चल पड़ा। “जब उपवर्ष कनकपुरी पहुंचा तो उसने पाया कि इन बीस सालों में कनकपुरी नगरी से नगर हो चुकी थी। कई नए प्रासाद, नए बाजार, नए मार्ग बन चुके थे। बड़ी संख्या में लोग जीवन व्यापार में लीन थे। अपने घर पहुंचा तो देखा उनका घर नाट्यशाला में बदल चुका था। भाई ने नया घर बनवा लिया था और परिवार समेत वहीं रहता था। भाई का घर ढूंढने में उसे दिक्कत नहीं हुई। उसे यह देखकर खुशी हुई कि उसके भाई को शहर में बहुत लोग जानते थे और

उसका सम्मान करते थे। इन बीस सालों में उसका भाई एक लोकप्रिय नाटककार व गीतकार बन चुका था। उसके लिखे नाटक चाव से देखे जाते थे। उसके रचे गीत उत्सवों में गाए जाते थे। उसकी रचनायें जनसाधारण में लोकप्रिय थीं और विद्वमंडली में उसका डंका बजता था। उसके रचे पात्रों, उनके स्वभावों, कार्य–कलापों पर कुछ इस तरह से चर्चा होती थी, मानों वे वर्ष के रचे पात्र नहीं, बल्कि जीते–जागते इंसान हों।’’

‘‘दोनों भाई मिले तो बस ठिठककर रह गए। वर्ष तो माने बैठा था कि भाई के दर्शन शायद ही होंगे। यह बिन मांगे मुराद मिलने जैसा था। दोनों भाईयों में कई बातें हुई कई दिनों तक हुई। जीवन अनुभव बांटे गए. किस्से सुनाए गए। जब वर्ष को अमर फल की बात पता चली तो वह हर्ष और हैरानी के मारे कुछ कह नहीं पाया। अगर किसी का भाई कहे कि वह अमर फल खाकर आया है तो उसका हैरान होना स्वाभाविक है। फिर उसे चिंता ने आ घेरा। उसे शंका हुई कि यह अमर फल सिर्फ अमर बनाता है या शरीर को निरोग भी रखता है। उसने पिता को मृत्यु से पहले दो साल तक बीमारी से तड़पते देखा था। इन दो सालों में उसने बहुत भोगा था और उसका मानना था कि इंसान का निरोगी रहना बहुत जरूरी है। पर जब उसे गुफा वाले बूढ़े का पता चला तो वह निश्चिंत हो गया।’’

‘‘कुछ दिन कनकपुरी में रहने के पश्चात उपवर्ष ने एक बार फिर अपनी राह पकड़ी। भाई का रोकना व्यर्थ गया। उपवर्ष इस बार सीधा अपने नए मित्र के पास गया। वहां दोनों ने तय किया कि विश्व भ्रमण किया जाए। संपूर्ण उत्तर भारत का भ्रमण कर वे चीन की ओर बढ़ चले। बाइस साल बाद जब वापस आए तो उपवर्ष एक फिर अपने भाई से मिलने चल पड़ा। कनकपुरी पहुंचा तो पता चला, भाई की मृत्यु हो चुकी है। यह सुनकर उसका कनकपुरी आने का उत्साह खत्म हो गया। अपने भतीजों से मिलकर वह जल्द ही वहां से चला गया, पर उसे तसल्ली हुई कि कनकपुरी उसके भाई को भूली नहीं थी। आज भी उसके लिखे नाटक जनजीवन में लोकप्रिय थे, उसके रचे गीत कनकपुरी की गलियों में गूंजा करते थे, कई नाट्यशालाओं का नाम उसके भाई के नाम, उपनाम पर पड़ चुके थे। उसके नाम पर पुरस्कार दिए जाने लगे थे।’’

‘‘यह नगर उसके भाई को भूला नहीं है, यह तसल्ली उसे एक बार फिर हुई, जब वह तीसरी बार कनकपुरी आया पचास साल बाद।’’ ‘‘इन पचास सालों में कनकपुरी की प्रतिष्ठा नष्ट हो चुकी थी। पड़ोसी राजा ने कनकपुरी को तहस नहस कर दिया था। उसके भाई की नाट्यशाला युद्ध की भेंट चढ़ चुकी थी। उसके भतीजे कनकपुरी छोड़कर न जाने कहां जा चुके थे। किसी को नहीं मालूम था, वे जीवित हैं भी या नहीं। उनका वंश विलीन हो चुका था और उसका भाई...’’ कनकपुरी आज भी उसके भाई को नहीं भूली थी। पड़ोसी राजा ने कनकपुरी तो नष्ट कर दी, लोगों के घर भी उजाड़ दिए थे, पर वर्ष की प्रतिष्ठा का वह कुछ नहीं बिगाड़ पाया। उपवर्ष देख रहा था, उसके परिवार का अस्तित्व, कनकपुरी की सुंदरता, राजा का परिवार सब काल की गोद में समा चुके थे, पर उसके भाई का नाम और काम दोनों जीवित थे। उसकी कृतियां आज भी लोगों का हौसला बढ़ाती थीं, उन्हें गुदगुदाती थीं, जीवन का अर्थ समझाती थीं। उसके गीत लोकगीत के रूप में कनकपुरी की सांस्कृतिक धरोहर बन चुके थे। उसके नाटक दुखी नगरवासियों का दर्द भुलाने का जरिया थे। वर्ष अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के बीच में आज भी उतना ही सक्रिय था। उपवर्ष हतप्रभ रह गया। उसने अपने साथी से प्रश्न किया, ‘अमर कौन है, मैं जिसे दुनिया में सिर्फ एक व्यक्ति जानता है, या मेरा भाई जो मृत्यु के इतने सालों बाद भी लोगों के बीच जिंदा है, सार्थक है।’

कहानी सुनाकर बैताल ने कंधे पर हाथ मारा, ‘‘बोल विक्रम दे जवाब! बता उपवर्ष के प्रश्न का उत्तर क्या है? दोनों भाईयों में अमर कौन है और क्यों है?’’ बैताल की यही खूबी थी कि वह कहानी को एक ऐसे मोड़ पर लाकर प्रश्न करता था कि विक्रम बोले बिना रह नहीं पाता था। अपनी आदत का मारा विक्रम इस बार फिर बोल पड़ा, ‘‘हे बैताल! तू जानना चाहता है न कि दोनों भाईयों में अमर कौन है, सुन ‘‘जिसे तुम मृत्यु कहते हो न बैताल ! उसका दूसरा नाम है देहान्त, अर्थात देह का अन्त। हर मनुष्य का एक न एक दिन देहान्त होना तय है, परन्तु मनुष्य देह मात्र नहीं होता। एक इंसान की पहचान होती हैं, उसके किए हुए काम। चाहे वह हजार साल पुराना राजा हो या हमारा निकट पड़ोसी, हम उन्हें उनके किए कामों से पहचानते हैं। एक इंसान का काम, उसका व्यवहार, विचार, भाषण, रचनायें उसके होने की निशानी हैं।’’

‘‘हर इंसान, चाहे वह कितना भी साधारण क्यों न हो, कुछ लोगों की जिंदगी में कोई न कोई भूमिका जरूर निभाता है। अधिकतर मामलों में यह भूमिका उसके परिवार या कारोबार तक ही सीमित रहती है इसलिए उस इंसान के जाने के बाद सिर्फ परिवार वाले या कारोबारी साथी ही उसकी कमी को महसूस करते हैं। कुछ लोग अपनी सक्रियता के चलते पूरे मोहल्ले या नगर को प्रभावित करते हैं। वह व्यक्ति कोई समाज सेवक हो सकता है, इलाके का कोई प्रतिष्ठित वैद्य या अपनी लाजवाब मिठाइयों से नगर वासियों का जी लुभाने वाला दुकानदार। इसी प्रकार कुछ लोगों के काम का दायरा

उनके नगर या राज्य की सीमाओं को पार कर जाता है, जैसे कोई चकवर्ती राजा, कोई पहुंचा हुआ संत या फिर कोई प्रतिभाशाली संगीतकार। इनके किए काम एक बहुत बड़ी आबादी को प्रभावित करते हैं इसलिए इनकी कमी को ज्यादा लोग महसूस करते हैं।''

''परन्तु जिंदगी किसी के जाने से रुक नहीं जाती। जल्द ही इस कमी को दूसरे इंसान पूरा करने लगते हैं, चाहे आंशिक तौर पर ही सही। विधवा स्त्री नाती–पोते में अपना गम भुला पाती है, लोग नए वैद्य के पास भीड़ जमाने लगते हैं, राजा का बेटा गद्दी संभाल लेता है। हम शून्य में नहीं रहते, हालांकि जाने वालों की याद बहुत आती है।''

''जिस प्रकार हमारे जीते जी सिर्फ कुछ लोग ही हमें जानते हैं, उसी प्रकार हमारे जाने के बाद भी सिर्फ कुछ लोग ही हमारे कामों से प्रभावित होते हैं। हमारा होना, न होना असल में हमारे परिचितों के होने न होने पर निर्भर करता है। इसलिए उपवर्ष चाहे सृष्टि के अंत तक जी ले, उसका कोई अर्थ नहीं है। दूसरी तरफ वर्ष की रचनायें उसके जाने के बाद भी कनकपुरी के लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं, इसलिए कनकपुरी वासियों के लिए वह आज भी अमर है और तब तक अमर रहेगा जब तक उसकी रचनायें मौजूद रहेंगी। परन्तु कनकपुरी से बाहर वर्ष की रचनाओं को कोई नहीं जानता, इसलिए वहां उसका होना या न होना बराबर है। हे बैताल ! यह हमारे जीते जी किए हुए कामों से प्रभावित होने वाले व्यक्तियों की संख्या व प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है कि हमारे होने न होने को कितने लोग महसूस करेंगे और कितनी देर तक या कितनी दूर तक महसूस करेंगे। यही अमरत्व है।''

परन्तु तू जरा खुद को देख! अपने जीवित रहते तूने कुछ भी ऐसा नहीं किया कि तुझे याद किया जा सके, पर भूत बनकर तूने मुझसे ऐसे–ऐसे सवाल किए कि हमारे सवाल–जवाब के कारण तुझे सदियों तक याद किया जाएगा। तू एक बैताल के रूप में अमर रहेगा।

विक्रम का इतना कहना था कि बैताल ने जोर का अट्टहास किया और विक्रम की तारीफ करते हुए अपने पेड़ की ओर चल पड़ा, एक बार फिर उल्टा लटकने के लिए...।

सुनील भट्ट
सहायक महाप्रबंधक(सीएसएस व राजभाषा)
बीएसएनएल निगम कार्यालय, नई दिल्ली

''मानव बनाम दानव''

हे मानव तू क्यों दानव बनता जा रहा है
आमोद–प्रमोद के प्रपंचों में उलझकर क्यों
एक श्रेणी और नीचे धँसता जा रहा है
सुना नहीं या सुनकर अनसुना करता जा रहा है
'बड़े भाग मानुष तन पावा' इनके अर्थों को
भी निरर्थक करता जा रहा हैं।
प्रकृति के मासूम निरीह पशु पक्षी भी
तुझसे बेहतर होते जा रहे हैं।
कम से कम अपनी ही जाति को नहीं मारते खाते
और तुझको समता का पहला पाठ पढ़ाते जा रहे हैं।
दिव्यता तो जैसे तुझसे कितने जन्मों को
दूरी बनाती जा रही है
सच पूछों तो दानव बनने की प्रक्रिया में आज
तू ईश्वर के अस्तित्व को ही नकराते जा रहा है।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक(राजभाषा)
इरेडा

''अपने लिए जिए तो क्या जिए''

जी हाँ दोस्तों, अपने लिए तो हर कोई जीता है। कीट पतंगा, पशु–पक्षी एवं अन्य सूक्ष्म अथवा विशालकाय प्राणी सभी किसी न किसी तरह अपने लिए तो जी ही लेते हैं। जो इस धरती पर आया है वो सब के सब कुछ न कुछ करके अपनी जिंदगी गुजर बसर करते ही हैं और फिर इस दुनिया को छोड़कर चले जाते हैं। यही इस सृष्टि का सत्य है। परन्तु क्या हम मानव भी कोई साधारण प्राणी हैं? क्या हमारे जीवन का उद्देश्य भी केवल अपनी जिंदगी जीना है? क्या इसी में मानव जीवन की सार्थकता है? क्या यह हमें वास्तविक खुशियां प्रदान कर सकेगा? क्या हमारी मानव संस्कृति भी हमें अन्य जीवों की तरह जीना सिखाती है? क्या मानव होने के नाते हमारी जिम्मेदारी इस सृष्टि को और सुन्दर बनाने, हर जीव जंतु को संरक्षित कर खुशियों भरे संसार को प्रगति के एक नए मुकाम तक पहुंचाने की नहीं हैं? क्या हमारे सोचने समझने की क्षमता, हमारा विवेक हमें यह सोचने पर मजबूर नहीं करता कि हमारी जिंदगी सर्वश्रेष्ठ है, दूसरे जीव–जंतुओं से भिन्न है और हमारे जीवन का उद्देश्य अपने अतिरिक्त सबको साथ–साथ खुश रखकर चलते रहना है?

जी हाँ दोस्तों, परमपिता परमेश्वर ने हमें मानव जीवन दिया है जो कि सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है और मानव जीवन का उद्देश्य कभी इतना छोटा नहीं हो सकता कि वो सिर्फ अपने बारे में सोचे। हमारा विवेक, हमारी सोचने की क्षमता हमें अन्य जीव जंतुओं से अलग करती है तो हमारे जीवन का उद्देश्य भी सामान्य नहीं हो सकता। हमें सबसे पहले उस परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद करना चाहिए जिसने इतना सुन्दर उपहार मानव जीवन के रूप में दिया और ये प्रार्थना करनी चाहिए कि हम औरों के काम आ सकें और हमारा जीवन सफल हो –

''तन स्वस्थ्य तूने गढ़ डाला
मस्तिष्क विवेक से भर डाला
मानव जीवन उपहार दिया
कितना सुन्दर संसार दिया
मानव–जीवन उपहार दिया।''

मानव जीवन अनमोल है और इसे हमें व्यर्थ नहीं जाने देना है। हम असीम ऊर्जा के मालिक हैं। हमें खुद को खुश रखते हुए सभी को साथ लेकर विकास की अनंत सीमाओं को लांघना है और सम्पूर्ण खुशहाली के सपने को साकार करना है। और यह तभी संभव है जब हम संकीर्णताओं से ऊपर उठकर जन कल्याण की भावना के साथ जीने की राह पर अग्रसर होंगे। हमारे जीवन का उद्देश्य यह कतई नहीं हो सकता कि हम सिर्फ अपने बारे में सोचें, केवल अपने सगे–सम्बन्धियों तक ही अपने आपको सीमित रखें। ऐसा करना मानव जीवन की सार्थकता को झुठलाना है। ईश्वर की इच्छा का अनादर करना है। पुराणों में लिखा है –

''अष्टादश पुराणेषु व्याशस्य वचनंयम
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम''।

अठारहों पुराण में महर्षि व्यासजी यही दो बातें मूलरूप से कहतें है कि परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और दूसरों को दुःख देने से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

यह अति प्रासंगिक है। जब आप किसी की मदद करते हैं तो आप ईश्वर द्वारा प्रदत्त अपने सामर्थ्य का सदुपयोग करते हैं जिससे ईश्वर प्रसन्न होता है और आपकी आत्मा को अलौकिक शांति मिलती है। तब आपकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता क्योंकि यह वास्तविक खुशी है जो परहित जनित है। यह स्थायी आनंद है जो आपको ईश्वर के करीब ले आता है और आपके जीवन का मार्ग सही दिशा में निर्देशित होती है। दूसरी ओर जैसे ही आप किसी को दुःख पहुचाते हैं, दूसरों की खुशियों की परवाह नहीं करतें हैं तो ईश्वर के ही बनाये प्राणी का अपमान होता है और इससे ईश्वर का नाखुश होना स्वाभाविक है। जब ईश्वर ही आपसे नाखुश हो तो आपकी आत्मा का बेचैन हो जाना, अशांत हो जाना लाज़िमी है और यही कारण है की जब आप ऐसा करके आगे बढ़ते हैं तो आपकी खुशियां क्षणिक होती हैं और देर सवेर आपको यह लगने लगता है कि आप जीत कर भी हार गए।

''जिंदगी का मजा तो है किसी के लिए कुछ कर जाने में मिली सफलता हमको दूसरों के लिए जीने में या मर जाने में''

हाँ दोस्तों, अपने लिए सौ बरस की जिंदगी जीने से बेहतर है किसी और के लिए प्राण न्योछावर कर देना।

आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में कभी कभी हम अपने जीवन के मूलभूत उद्देश्य से भटक जाते हैं और अज्ञानतावश अपनी खुशियों की तलाश में हम इतना रम जाते हैं कि मानव धर्म जैसी चीज़ पीछे छूट जाती है। उनकी अनदेखी हो जाती है। कई बार खासकर शहरों में यह देखने सुनने को मिलता है कि रास्ते में कोई दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति सिर्फ इसलिए अपनी

जान गवां बैठा क्योंकि पास से गुजर रहे किसी ने भी मदद का हाथ नहीं बढ़ाया। यह मानव धर्म की अवहेलना है। इस अवहेलना के साथ अर्जित सफलता या खुशियां किसी काम की नहीं क्योंकि यह आपको अशांति की राह पर ले जाएंगी जहाँ स्थायी खुशी हो ही नहीं सकती। औरों की परवाह किए बगैर पाई गई खुशियों से इंसान खुश होने का नाटक भर कर सकता है। उससे आंतरिक खुशी की अनुभूति नहीं हो सकती क्योंकि उसने ईश्वर की अपेक्षा की उपेक्षा की है।

एक दूसरे का हाथ थामकर आगे बढ़ने का नाम ही जिंदगी है। हर पिछड़नेवाले को हमारा साथ चाहिए। त्याग, बलिदान, समर्पण, प्रेम–भाईचारा ये सब मानव जीवन के आभूषण हैं। जो इंसान इन आभूषणों को मानव–कल्याण हेतु धारण कर जिंदगी जीता है वो महान बन जाता है। इतिहास का हिस्सा बन जाता है। इतिहास साक्ष्य है कि जितने भी महापुरुष देश और समय की सीमा को लांघकर प्रसिद्ध हुए उनमें परोपकार त्याग, समर्पण और जनहित के गुण कूट कूट कर भरे थे। उन्होंने निजी जिंदगी की आवश्यकताओं को बाद में और मानव कल्याण हेतु सत्य का साथ देना या अधर्म के खिलाफ लड़ना पहले पसंद किया।

तो दोस्तों आइए, हम मानव जीवन की गहराइयों को समझें और अपना हाथ औरों की मदद के लिए हमेशा आगे रखें। यह मदद किसी रूप में हो सकती है। केवल आर्थिक सहायता ही नहीं है। जैसा की हमने कहा कि हम असीम ऊर्जा के मालिक हैं तो हम किसी न किसी रूप में औरों की मदद करने में अवश्य सक्षम हैं और हमें ऐसा कोई मौका आता है तो सहर्ष आगे आकर खुशी–खुशी सहायता करनी चाहिए। कर्म अच्छे होने चाहिए, फल की चिंता कतई न करें **‘‘कर्मण्येवाधिकारेस्तु मा फलेषु कदाचन’’**

‘‘कर भला तो हो भला
है यही जीने की कला।’’

तो आइए एक बार फिर हम जीवन को सही राह दिखाते हैं और ये पंक्तियाँ दोहराते हैं–

‘‘अपने लिए जिए तो क्या जिए –२,
ऐ दिल तू जिए जमाने के लिए।’’

सुनील कुमार
अपर महाप्रबंधक(सिविल)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

‘‘कई रंग जिन्दगी के’’

जिन्दगी पहले इम्तिहान लेती फिर सिखाती है,
जिन्दगी हर कदम पर इँसान को आजमाती है।

ऐसा कौन है यहाँ जो जिन्दगी को समझ सका,
कभी सहज–सरल कभी कठोर नजर आती है।

जरूरत हर क़दम पर हमारे इक नए वर्जन की,
जिन्दगी ठोकरें दे–दे इँसान को इँसान बनाती है।

खुशी के फूल खिलाती गमों की धूल उड़ाती है,
जिन्दगी अर्श पे पहुँचा फिर फर्श पे ले जाती है।

कई रंग जिन्दगी के देखें है हमने कहे ‘‘पुखराज’’
अपने इशारों पर ये ताउम्र इँसान को नचाती है।

पुखराज मीना, कार्यपालक
नेशनल शेडयूल्ड कास्टस फाइनेंस
एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी)

सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा से तात्पर्य किसी चीज़ के संपूर्ण रूप से जुड़े होने और आंतरिक सुसंगति से है। सत्यनिष्ठा के अंतर्गत नैतिक सिद्धांतों के बीच में आंतरिक सुसंगति और नैतिक सिद्धांतों तथा व्यवहार में सुसंगति दोनों आते हैं। सत्यनिष्ठा संपन्न व्यक्ति का आचरण लगभग हर स्थिति में उसके नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप होता है।

नैतिक शासनः–

यह शासन का एक तरीका है, जिसका संबंध व्यवसाय, सरकार, राजनीति, अंतरर्राष्ट्रीय संबंध, देखभाल आदि में प्रबंधन और नीति बनाने से संबंधित गतिविधियों के सही और उचित आचरण से है।

नैतिक शासन की सफलता के लिए पारदर्शिता, खुलापन, सूचना प्रवाह और संचार में संगतता होनी चाहिए। सत्यनिष्ठा के अंतर्गत नैतिक सिद्धांतों के बीच में आंतरिक सुसंगति और नैतिक सिद्धांतों तथा व्यवहार में सुसंगति दोनों आते हैं। सत्यनिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति का आचरण लगभग हर स्थिति में उसके नैतिक सिद्धांत के अनुरूप होना चाहिए और नैतिक सिद्धांत वस्तुनिष्ठ आधार पर नैतिक होने चाहिए। सत्यनिष्ठा के अंग्रेजी पर्याय integrity का तात्पर्य किसी चीज के सम्पूर्ण रूप से जुड़े होने और आंतरिक सुसंगति से हैं। सत्यनिष्ठा के अंतर्गत नैतिक सिद्धांतों के बीच में आंतरिक सुसंगति और नैतिक सिद्धांतों तथा व्यवहार में सुसंगति दोनों आते हैं।

सुसंबद्धता में निहित है कि नैतिक सिद्धांतों का अधिक्रम या सोपान क्रम भी सुनिश्चित होना चाहिए ताकि अगर दो सिद्धांतों का टकराव हो तो भी कर्ता को इस बात का संशय न हो कि उसे किस सिद्धांत को वरीयता देनी है अगर किसी नैतिक सिद्धांत से विचलन होता है तो उस विचलन को न्यायसंगत ठहराने के लिए पर्याप्त आधार होना चाहिए। प्रसिद्ध दार्शनिक कांट की भाषा में कहें तो मुझे किसी नियम के उल्लंघन का हक तभी है जब मैं यह कहूँ कि जैसी स्थिति में मैं हूँ वैसी स्थिति में नियम का उल्लंघन करना भी नियम माना जा सकता है।

सत्यनिष्ठा के प्रकार (types of Integrity)

सत्यनिष्ठा बहुत व्यापक शब्द है इसे और अधिक सुपरिभाषित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार देखा जा सकता है जैसेः

क. बौद्धिक सत्यनिष्ठा (Intellectual integrity)

ख. व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा (Personal integrity)

ग. व्यावसायिक सत्यनिष्ठा (Business Professional integrity)

घ. कलाकार की सत्यनिष्ठा (Integrity of the artist)

ङ. ब्रांड की सत्यनिष्ठा (Brand integrity)

बौद्धिक सत्यनिष्ठा –

अपना मूल्यांकन उन्ही प्रतिमानों पर तथा उतनी ही कठोरता से करना जिन पर हम किसी और का मूल्यांकन करते हैं। अगर कोई व्यक्ति पीठ पीछे किसी और के बारे में गलत बोलता है तो उसे किसी ऐसे व्यक्ति पर नाराज नहीं होना चाहिए जो उसके बारे में पीछे से गलत बोलता हो। अपने सिद्धांतों और व्यवहारों पर गहराई से विचार करके उन असंगतियों और अंतर्विरोधों की खोज करना जो हमारी सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाते हैं और जहाँ तक संभव हो ऐसी असंगतियों को समाप्त करने की कोशिश करना।

बौद्धिक पाखंड– इसका अर्थ है अपने लिए अलग तथा दूसरों के लिए अलग नैतिक मानदंड रखना तथा अपने अंतर्विरोधों के प्रति लापरवाह रहना या उन्हें जान बूझकर नजरअंदाज करना।

व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा (Personal integrity)– वैयक्तिक नैतिक सिद्धांतों व आचरण के बीच सुसंगति, इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण जीवन से है किसी क्षेत्र विशेष से नहीं।

व्यवसायिक सत्यनिष्ठा (Business Professional integrity)– अपने व्यवसाय से जुड़े उन नैतिक सिद्धांतों का पालन करना जो उस व्यवसाय की आचार संहिता में शामिल है। जैसे वकील द्वारा अपने मुवक्किल की पूरी सहायता करना नैतिक है और दूसरे पक्ष के वकील से सांठ गाँठ कर लेना अनैतिक है।

अगर व्यवसायिक नैतिकता व सामाजिक नैतिकता में गहरा अन्तर्विरोध हो तो नैतिक संकट उत्पन्न होता है। ऐसे में सामाजिक नैतिकता का पालन करना चाहिए। यदि अस्पताल चिकित्सक से अनावश्यक तौर पर किसी मरीज की सर्जरी करने को कहे तो उसे आचरण संहिता के इस नियम का पालन करना चाहिए कि कनिष्ठ चिकित्सक, वरिष्ठ चिकित्सक

के निर्देशों के पालन करेंगे।

कलाकार की सत्यनिष्ठा (Integrity of the artist)– कलाकार को वही बात कहनी चाहिए जो वह सचमुच सोचता है। किसी आर्थिक लाभ या अन्य प्रकार के दवाब में आकर कोई गलत बात व्यक्त नहीं करनी चाहिए। कलाकार की बातों से समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसलिए उसकी नैतिक जिम्मेदारी है कि झूठ का प्रचार प्रसार न करें।

ब्रांड की सत्यनिष्ठा (Brand integrity)– किसी ब्रांड का अपनी छवि को सुसंगत रखना। विज्ञापनों का प्रायः एक जैसा होना बाजार सम्बन्धी नीतियों में समरूपता आदि ब्रांड सत्यनिष्ठा के अंतर्गत आते हैं।

व्यक्तिगत जीवन में सत्यनिष्ठा के लाभ (Benefits of integrity in personal life)– इससे व्यक्ति की विश्वसनीयता बढ़ती है। विश्वसनीयता बढ़ने से बाजार, राजनीति और प्रशासन में उसकी सफलता की सम्भावना बढ़ती है।

सम्मान बढ़ने से उसे आत्मसंतोष प्राप्त होता है इससे निष्पादन और बेहतर होता है।

अगर ऐसे व्यक्ति से कोई गलती हो भी जाती है तो उसे अपवाद समझा जाता है या ये माना जाता है कि उसका इरादा गलत नहीं रहा होगा।

प्रशासन में लाभ (Benefits in administration)

क. कर्मचारियों और वरिष्ठ अधिकारियों का विश्वास प्राप्त हो जाता है।

ख. जनता का विश्वास भी प्राप्त हो जाता है और अगर जनता को अधिकारियों पर विश्वास हो तो सामाजिक परिवर्तन तथा अन्य मामलों में उसका सक्रिय सहयोग मिलता है।

ग. कल्याणकारी राज्य में सत्यनिष्ठा रखने वाले लोकसेवकों की उपस्थिति से इस बात की गारंटी होती है कि राज्य जिन वर्गों को लाभान्वित करना चाहता है वे लाभ सचमुच उन्हें ही प्राप्त होंगे।

सत्यनिष्ठा के उदाहरण (Examples of integrity)

क. मतदाताओं या उपभोक्ताओं या नागरिकों के सामने कोई झूठा दावा न करना।

ख. सफलता में उतना ही श्रेय लेना जितना योगदान वास्तव में उस व्यक्ति का है। अधिक श्रेय मिल रहा हो तो विनम्रता से अस्वीकार कर देना।

ग. विफलता की स्थिति में आगे बढ़कर उसकी जिम्मेदारी को स्वीकार करना चाहिए जिसमें उसके अधीनस्थों की भूमिका प्रमुख रही हो।

घ. व्यक्तिगत लाभ के लिए झूठ बोलने दूसरों की बुराई या तारीफ करने जैसी प्रवृत्तियों से बचना इत्यादि।

ङ. अपनी प्रतिबद्धताओं और वायदों को निश्चित समय पर पूरा करना, चाहे उसके लिए कितना भी त्याग करना पड़े।

च. किसी व्यक्ति से उतनी ही अपेक्षा करना जितना आप स्वयं उसके लिए करते हैं।

किसी ऐसे उत्पाद के विज्ञापन का समर्थन न करना जिससे आप स्वयं सचमुच संतुष्ट न हो और जिसे समाज के लिए अच्छा न मानते हो।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)
इरेडा

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित–अशिक्षित,
नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।"

– **राहुल सांकृत्यायन**

विश्वपटल पर भारत की स्थिति

संसार में लगभग 225 देश हैं। इन देशों की संख्या किसी Point of Time पर निश्चित हो सकती है लेकिन कई बार ऐसा हुआ है कि जो देश किसी दूसरे देश से टूटकर बने हैं, तो कई बार दो टूटे हुए देश आपस में मिलकर फिर से एक बन जाते हैं। पिछले दिनों जर्मनी में ऐसा ही कुछ देखने को मिला था। परिस्थिति वश कुछ देश अपने आप को अलग राष्ट्र घोषित तो कर देते हैं और कुछ देश उनको मान्यता भी दे देते हैं लेकिन विश्व बिरादरी एकमत उनको पूर्णतरू मान्यता नहीं देती। अभी हाल में अफगानिस्तान का घटनाक्रम सबको याद है। कहने का मतलब है कि राष्ट्रों की संख्या ऊपर नीचे होती रहती है। इन 225 देशों की कुल संख्या को अर्थव्यवस्था के मुताबिक तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1. विकसित राष्ट्र
2. विकासशील राष्ट्र
3. अविकसित राष्ट्र

1. **विकसित राष्ट्र**– जिन देशों ने कृषि, उद्योग, परिवहन, व्यापार तथा शिक्षा एवं स्वास्थ क्षेत्र में तकनीक का विकास कर अपने लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठा दिया है वे विकसित राष्ट्र कहलाते हैं। इन देशों की जीडीपी काफी अधिक होती है तथा आधारभूत संरचना भी सुदृढ होती है। इन देशों ने अपने मानवीय एवं प्राकृतिक साधनों का भी अधिकतम प्रयोग कर लिया होता है तथा लोगो की प्रति व्यक्ति आय भी उच्च होती है।

2. विकासशील राष्ट्र

वे राष्ट्र जो आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अभी अग्रसर हैं। इन देशों में प्राकृतिक संसाधनों के विपुल भंडार तो हैं लेकिन उपलब्ध संसाधनों का पर्याप्त संभावनाएं भी हैं लेकिन कुशल एवं उत्तम उपयोग नहीं हुआ है। इन देशों को अल्पविकसित या बदले विकासोन्मुख या विकासशील देश कहा जाता है। इन देशों में भारत, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, सऊदी अरब, आदि।

3 अविकसित (पिछड़े) राष्ट्र–

वे राष्ट्र जिनकी अधिकतर आबादी गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर करती है। प्राकृतिक साधन भी कम ही होते हैं तथा रोजगार दर न्यूनतम होती है। उद्योग धंधे भी नही होते, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाएं भी नदारद ही होती है। सोमालिया, हैती, मेडागास्कर उत्तर कोरिया, बरूंदी आदि दुनिया के सबसे गरीब देश हैं।

भारत की स्थिति

भारत एक प्राचीन सभ्यता है। जब अन्य सभ्यताएं जन्मी भी नहीं थी, उस वक्त भारत अपना विकास कर चुका था। हर क्षेत्र में चाहे वो अंतरिक्ष हो, चिकित्सा हो या तकनीक हो भारत का कोई सानी नहीं था। उन्नत दर्जे की शिल्पकारी, दस्तकारी के बेजोड़ नमूने देश में पाए जाते थे। प्राचीन भारत के मंदिरों की नक्काशी, निर्माण कार्यों को देखकर आज भी लोग दांतों तले उंगलिया दबा लेते हैं। 5000 वर्ष पूरानी यहाँ की सभ्यता, महाभारत कालीन अवशेष, यहाँ के शोर्य का वर्णन करते हैं। उस अवधि में भारत वर्ष आर्थिक और सामाजिक रूप से अपनी संपन्नता के चरम पर था। एक से बढकर एक कला में माहिर यहाँ के लोगो का विश्व में बोलबाला था।

समय के चक्र और बाद में अक्रमणय राजाओं के आपसी खींच–तान से विदेशी आक्रताओं ने इसका भरपूर लाभ उठाया और भारत का धन–वैभव सब कुछ लूट लिया गया। पहले मुगलों और बाद में अंग्रेजों की 200 वर्षों की गुलामी में भारत एक पराधीन राष्ट्र बनकर रह गया।

स्वतंत्रता पश्चात भारत की स्थिति–

अपने खोए वैभव को पुनः पाने के लिए स्वतंत्र भारत ने हुंकार भरी है। धीरे धीरे ही सही भारत उन्नति की ओर अग्रसर है। गुलाम भारत में जंहा सूई तक बाहर से आयात की जाती थी, वही आज कई तरह के कलपूर्जे तथा मशीनरी दूसरे देशों को निर्यात कर रहा है। अभी हाल में कोरोना संकट के दौरान भारतीय वैज्ञानिकों ने वैक्सीन बनाकर न केवल अपने लोगों की जान बचाई बल्कि पूरी दुनिया को वैक्सीन की पूर्ति भी की है। भारत ने पूरी मानवता के लिए संदेश दिया कि असल में विकसित देश वो हैं जो जान बचाने में आगे आए। जहाँ विश्व में इटली जैसे विकसित देशों में चिकित्सा व्यवस्था चरमरा गई थी, लेकिन भारत में सरकार के सक्रिय सहयोग और विभिन्न सरकारी उपक्रमों के योगदान के चलते कोरोना को नियंत्रित कर लिया गया। इतनी बड़ी आबादी में 100 करोड़ टीकाकरण का लक्ष्य हासिल कर लेना भारत को एक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाता है। अगर करोना का सही समय पर सही प्रबंधन नही हुआ होता तो कुछ बड़ी तबाही घटित हो जाती और बाद में मिली राहत ऐसे लगती जैसे–

''फसल सूख जाए जल बिन,
पत्ता– पत्ता गिर जाए तब
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।''

सरकार ने महामारी से जूझते 138 करोड़ लोगों का न केवल जीवन बचाया बल्कि गरीब तबके को मुफ्त राशन भी 2 वर्ष तक उपलब्ध कराया। दुःख की घड़ी में सरकार भारतीय जनता के साथ खड़ी थी। स्वास्थ्य और करोना संबंधित अपडेट देने के लिए स्वास्थ्य सचिव की प्रति दिन टीवी पर चर्चा होती थी, विशेषज्ञ अपने विचार रखते थे। एक स्वस्थ व्यक्ति ही देश अथवा समाज का भला कर सकता है। कहा भी गया है कि–

''सुख साधन चाहे जितने हो
पर काया यदि रोगों का घर हो
मिली हुई असंख्य सुख सुविधाओं का
फिर रह जाता नहीं कोई अर्थ''

चुनौतियों पर सफलता–

यूं तो कई ऐसे क्षेत्र हैं जंहा भारत विश्वपटल पर अपनी उपस्थिति बेहतर दिखा रहा है जैसे कि खाद्यान्न क्षेत्र और रक्षा क्षेत्र। बडे संघर्ष और कुर्बानियों से मिली आजादी के बाद भी भारत एक पिछड़ा हुआ देश था। देश की जनता कुपोषण, बीमारी और भुखमरी से जूझ रही थी। हर वर्ष कभी अकाल तो कभी बाढ से फसलें तबाह हो जाती थी। आज का भारत खाद्यान्न के मामले न केवल आत्म निर्भर है बल्कि दूसरे देशों को निर्यात भी कर रहा है। अभी हाल में श्रीलंका को और उससे पहले अफगानिस्तान को दवाईयां तथा अन्य खाधान्न सामग्री भेजकर भारत ने मानवता के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। रक्षा क्षेत्र में सुपर जेट, मिसाइलें, राकेट बनाकर भारत विश्व के विकसित राष्ट्रों को टक्कर दे रहा है।

सफलता के क्षण

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत का विश्व में कोई सानी नही है। इतना सटीक और सस्ता अंतरिक्ष प्रेक्षापण कार्यक्रम कही भी नहीं है। अपने आप को विकसित देश कहने वाले राष्ट्र भी भारत की इस उपलब्धि पर यशोगान करते हैं। हां मैं मानता हूं कि भ्रष्टाचार से भारत अछूता नहीं है लेकिन जितने भी भ्रष्टाचारी थे वो अपनी करनी भुगत रहें हैं। वर्तमान में कोई भी बड़ा भ्रष्टाचार का मामला उजागर नहीं हुआ है। लेकिन फिलहाल हम अपने देश की इन शानदार उपलब्धियों पर कविवर की इन पंक्तियों के साथ जश्न मना सकते हैं–

''छोटी–छोटी खुशियों के क्षण
निकल जाते हैं रोज जहाँ
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं''

अशोक कुमार
सहायक अधिकारी
भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड

> ''समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक
> हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।''
>
> **– (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर**

निःस्वार्थ प्रेम और समर्पण

आज फिर बारिश की फुहार आ गई और संग अपने ले आई ढेर सारी यादों का जखीरा। ऐसी ही एक भीगी रात ने दो वर्ष पूर्व प्रदीप को निशा से हमेशा के लिए छीनकर मृत्यु की भेंट चढ़ा दिया था और निशा के जीवन को वीरान कर दिया था। कुछ रह गया था तो बस संघर्ष, सूनापन और दर्द भरे अश्क जो अब तक निशा के जीवन का अभिन्न अंग बन गए थे। वो हर सवेरे इसी कामना से जागती कि काश कोई चमत्कार हो और प्रदीप उसे साक्षात दर्शन दे दे लेकिन अन्दर ही अंदर तो वह भी जानती थी कि ऐसा होना असंभव है क्योंकि सृष्टि का यही शाश्वत नियम है कि गया हुआ इंसान कभी वापिस लौटकर नहीं आता। इस तथ्य का स्मरण होते ही उसका मुखपटल पुनः उदासीनता और निराशा से भर जाता है। उसके मन में कोई भी इच्छा शेष ना बची थी और वह एक कंकाल या जिंदा लाश की भांति जीवन जिए जा रही थी।

कई लोग उसे दूसरे विवाह की सलाह देते पर प्रदीप की यादों का हुजूम इस कदर उसके मन मस्तिष्क में घर किए हुए था कि दूसरे किसी आदमी को अपनी जिन्दगी में शामिल करने का ख्याल भी उसे न आता था। वह इस बात से आश्वस्त थी कि प्रदीप के जैसा और कोई भी उसे जिन्दगी में उतना प्यार व सम्मान साथ में नहीं दे सकता। कभी कभी सोचती कि उसकी हँसती खेलती जिन्दगी को ना जाने किसकी नजर लग गई जो एक मिनट में उसकी पूरी दुनिया ताश के पत्तों की तरह ढह गई पर नीति और भाग्य का लिखा कौन बदल सकता है। आज फिर बरखा क्या लौट के आई, सारी वो यादें सभी वो बातें, सभी वो पल जो प्रदीप और निशा की जिन्दगी का अनूठा हिस्सा थे, एक चलचित्र के समान निशा के समक्ष नजर आते हुए अश्रुओं का मिलन अँखियों से करा रहे थे।

अचानक उसकी सुनसान नगरी में कुछ दस्तक सी हुई, शायद दरवाजे पर कोई था। निशा दरवाजा खोलने के लिए उठी तो बाहर से एक आवाज तैरते हुए निशा के कर्णों में आई... ''निशा, निशा दरवाजा खोल बेटा''। दरवाजा खोला तो निशा ने अपने माता पिता को समक्ष खड़ा पाया। निशा को लगा जैसे कि भगवान ने स्वयं आकर उसके जख्मों पर मरहम लगा दिया हो और वह माँ के गले लग कर फूट फूट के रोने लगी। माँ निशा के दिल के हाल से भली भांति वाकिफ थी। उन्होंने अपनी लाडली को सीने से लगा लिया और उसे सांत्वना देने लगी। अंदर आईं तो देखा कि सारा घर उथल पुथल हुआ पड़ा था, कहीं प्रदीप और निशा की हँसती मुस्कुराती तस्वीरें पड़ी थी तो कहीं कपड़े बिखरे पड़े थे। माँ ने निशा को सोफे पे बिठाया और स्वयं घर को व्यवस्थित करने में लग गईं। पापा निशा के बगल में बैठ कर उसके सर पर हाथ फेरते हुए उसका गम बांटने की कोशिश करते हुए उसे संभालने लगे और उसे यह खबर दी कि अब वे दोनों निशा के साथ ही रहेंगे.

दरअसल निशा के पिता किशोर जी एक सरकारी संस्थान में कार्यरत थे और माँ विमला जी गृहिणी थीं और वे दोनों दिल्ली में रहते थे। एक एडवरटाइजिंग एजेंसी में कार्यरत निशा और प्रदीप काम के चलते मुंबई में ही बस गए थे। प्रदीप के माता पिता उसके विवाह के पूर्व ही गुजर चुके थे और भाई बहन थे नहीं। तो ऐसी परिस्थितियों में निशा के पास अपने माता पिता का ही एकमात्र सहारा था।

प्रदीप के गुजर जाने के बाद से ही किशोर जी इस कोशिश में लगे हुए थे कि उनका तबादला मुंबई वाले दफ्तर में हो जाए पर एक सरकारी संस्थान में तबादला कराना बहुत ही मुश्किल कार्य है जिसे संभव कराने में लोगों की चप्पलें घिस जाती हैं, वर्षों तक की कड़ी तपस्या और मेहनत करनी पड़ती है, तब कहीं जाकर ये संभव हो पाता है। निशा की परिस्थितियों के बारे में किशोर जी के दफ्तर में भी सबको पता था और सब उनकी मदद करना चाहते थे इसलिए किशोर जी को मात्र दो वर्ष की अवधि में मुंबई तबादला मिल गया खबर सुनते ही किशोर जी व उनकी अर्धांगिनी मुंबई की टिकट कराके सदा के लिए निशा के साथ रहने के मकसद से दिल्ली से रवाना हो गए। निशा को इस बात के बारे में इसलिए नहीं बताया क्योंकि किशोर जी जानते थे कि वो उन्हें यही कहेगी कि ''अपना घर छोड़कर यहाँ आने की जरूरत क्या थी पापा। मैं धीरे–धीरे खुद को संभाल लूंगी।'' यकीनन माता–पिता के कंधों से बड़ा कोई सहारा नहीं होता। यही सोच किशोर जी और विमला जी आ गए रहने निशा के संग।

अब सुबह माता पिता के प्यार और दुलार के साथ होती और रात उनकी गोद में सर रखे रखे सो जाने से। इस परवाह के चलते निशा धीरे धीरे सँभलने लगी और जिन्दगी से आशाएं बाँधने लगी। वह समझने लगी थी कि यद्यपि प्रदीप का जाना दिल को झकझोर कर रख देने वाला एक हादसा था पर जीवन के अंत का सूचक बिलकुल भी नहीं था। उसने लोगों से मिलना जुलना एक बार फिर शुरू कर दिया। अपने गम के सागर से बाहर निकल अब वह दफ्तर की पार्टियों का हिस्सा बनती और क्योंकि उसे बचपन से ही नाचने गाने का बेहद शौक था। कभी कभी रंगारंग कार्यक्रम में हिस्सा भी लेती।

अंततः उसकी जिन्दगी को पटरी पर आते देख किशोर जी व उनकी धर्मपत्नी अपने मुंबई में बस जाने के फैसले से बेहद संतुष्ट थे।

जिन्दगी यूँ ही धीरे धीरे आगे बढ़ती चली जा रही थी और देखते ही देखते किशोर जी व विमला जी को मुंबई में रहते हुए एक वर्ष हो गया। एक दिन निशा जब दफ्तर गई तो उसे पीछे से किसी आदमी ने ''निशा निशा'' कह कर पुकारा। निशा ने प्रत्याशा से मुड़कर देखा तो एक जाने पहचाने चेहरे वाले आदमी से सामना हुआ। क्योंकि उन्हें बिछड़े हुए बहुत वक्त हो चुका था। निशा को राकेश को पहचानने में थोड़ी असहजता तो हुई पर जब पहचाना तो खोई हुई मुस्कान से चेहरा सुसज्जित हो गया। राकेश निशा के बचपन का दोस्त था जो स्कूल खत्म होने तक उसके साथ था। स्कूल के पश्चात निशा ने आगे की पढ़ाई दिल्ली में ही की और राकेश अपने पिताजी का तबादला होने के कारण मुंबई आ गया। तब से दोनों का संपर्क टूट गया। आज अचानक इतने लम्बे अंतराल के बाद यूँ सामना हुआ तो दोनों बेहद प्रसन्न थे और फूले ना समा रहे थे। निराशा के सागर में गोते लगाता निशा का जीवन आशा की उड़ान भरने लगा था। अचानक एक दिन राकेश ने निशा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रख दिया। निशा अपने अजीज दोस्त को खोना नहीं चाहती थीं इसलिए बहुत ही शांत भाव से उसने राकेश को समझाया कि उसके लिए जीवन साथी का मतलब बस प्रदीप था और विवाह का अभिप्राय उसके संग जीवन यापन करना। उसने प्रदीप के अलावा किसी और के बारे में कभी कल्पना तक ना की थी। निशा की इस बात से राकेश को थोड़ा धक्का तो लगा परन्तु उसके प्रेम की गहराई देख कर उसका हृदय निशा के लिए और अधिक सम्मान से भर गया। निशा का प्रदीप के लिए समर्पण भाव यकीनन अद्भुत व प्रशंसनीय था और राकेश ने मन ही मन कामना की कि काश उसे भी ऐसा निःस्वार्थ प्रेम करने वाली जीवन संगिनी मिल जाए।

वैशाली कंचन
उप प्रबंधक, बीएचईएल

''यादें बचपन की''

बचपन का कोई मोल नहीं, बचपन का कोई तोल नहीं।
बाबा के हाथ पकड़कर, गांव बगीचे में घूमना
बुआ दीदी के साथ, गांव के मेले में जाना
ये सब यादें बचपन की, देती हमें खुशी अब भी
जून जुलाई की दोपहरी में, दोस्तों संग बाग में खेलना
पकड़म पाई, छुपन छुपाई, खो–खो, कंचे, कबड्डी, कुश्ती

मिट्टी के घरौंदें, राजा रानी, चिक्का, गुड्डा गुड्डी
गुलेल, पतंग, खेलते खेलते दिन का गुजर जाना
शाम को दादी की कहानियां, सुनते सुनते सो जाना
कितना अच्छा था वो बचपन, बहुत याद आता है बचपन
ऊंच नीच की कोई बात नहीं, सब एक से लगते थे
चाचा–चाची, दादा–दादी, हम सबको कहते थे
गर्मी की दोपहरी में, बगीचे में आम का बिनना
जामुन के पेड़ पर चढ़कर, काली काली जामुन का खाना
खेत से गन्ने तोड़कर, नदी तालाब में दोस्तो संग नहाना
बरसात की वो खुशियां, कागज की नाव से खेलना
शाम को दादा, बापू के डर से, दादी के आंचल में छिपना
ये सब यादें है बचपन की, जिसे चाहते हम फिर से जीना

रमेश चन्द्र शुक्ल
वरिष्ठ प्रबंधक–बी.ई.एम.एल
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

उद्योग 4.0

विनिर्माण तथा इसी प्रकार के उद्योगों और मूल्य–निर्माण प्रक्रियाओं के डिजिटल परिवर्तन को उद्योग 4.0 के रूप में जाना जाता है। यह चौथी औद्योगिक क्रांति का पर्याय है और विनिर्माण उद्योग के संगठन और नियंत्रण में बदलाव को दर्शाता है। औद्योगिक इंटरनेट ऑफ थिंग्स के साथ रिमोट मॉनिटरिंग और ट्रैकिंग दोनों संभव हैं। उद्योग 4.0 की परिभाषा के अनुसार, ”उद्योग में डेटा इंटरचेंज और ऑटोमेशन में मौजूदा प्रवृत्ति के लिए एक शब्द’’।

डिजिटलीकरण के परिणामस्वरूप विनिर्माण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है। चौथी औद्योगिक क्रांति को ”उद्योग 4.0’’ नाम दिया गया है। उद्योग 4.0 एक अवधारणा है जो जर्मन विनिर्माण उद्योग के प्रयास से दुनिया भर में मान्यता प्राप्त शब्द तक बढ़ी है। उद्योग 4.0 को समझने के लिए, संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को देखना आवश्यक है, जिसमें आपूर्तिकर्ता और विभिन्न प्रकार के स्मार्ट निर्माण के लिए आवश्यक सामग्रियों और घटकों की उत्पत्ति शामिल है। हमें एंड–टू–एंड डिजिटल आपूर्ति श्रृंखला और सभी विनिर्माण के अंतिम गंतव्य पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है, भले ही मध्यस्थ कदमों की संख्या कितनी भी हो।

औद्योगिक क्रांति का इतिहास

पहली औद्योगिक क्रांति

पहली औद्योगिक क्रांति के दौरान भाप और पानी की शक्ति के उपयोग ने हाथ से मशीन उत्पादन की ओर कदम बढ़ाया। क्योंकि नई तकनीक को लागू होने में काफी समय लगा, यह 1760 और 1820 या 1840 के बीच की अवधि को संदर्भित करता है। इसका प्रभाव कपड़ा क्षेत्र में महसूस किया गया, जो इस तरह के सुधारों को अपनाने वाला पहला क्षेत्र था। इसके साथ–साथ इसने लौह उद्योग, कृषि, खनन और बढ़ते मध्यम वर्ग जैसे सामाजिक नतीजों को प्रभावित किया।

दूसरी औद्योगिक क्रांति

रेलमार्ग और टेलीग्राफ का विकास, जिसने लोगों और विचारों को स्थानांतरित करने के तेज साधनों की अनुमति दी, साथ ही बिजली ने दूसरी औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया, जो 1871 और 1914 के बीच हुई और इसे तकनीकी क्रांति के रूप में भी जाना जाता है।

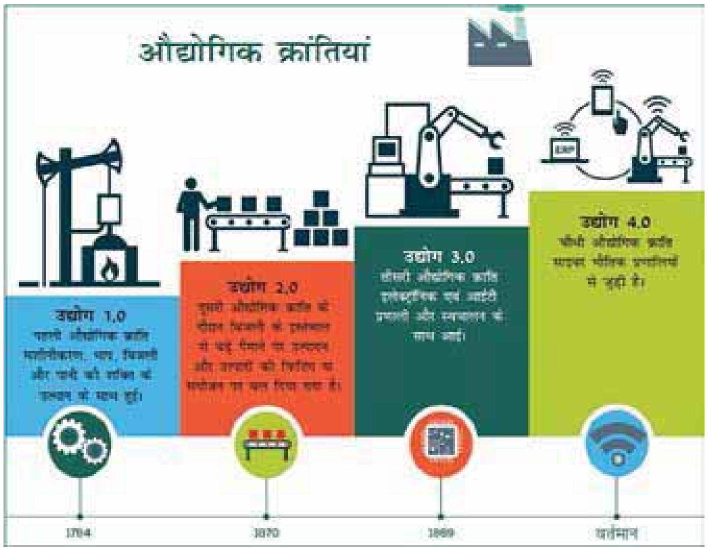
औद्योगिक क्रांतियां
उद्योग 1.0
पहली औद्योगिक क्रांति मशीनीकरण, भाप, बिजली और पानी की शक्ति के उत्थान के साथ हुई।
उद्योग 2.0
उद्योग 3.0
तीसरी औद्योगिक क्रांति इलेक्ट्रॉनिक एवं आईटी प्रणाली और स्वचालन के साथ आई।
उद्योग 4.0
चौथी औद्योगिक क्रांति साइबर भौतिक प्रणालियों से जुड़ी है।
ERP
1784
1870
1969
वर्तमान

तीसरी औद्योगिक क्रांति

दो विश्व युद्धों की समाप्ति के बाद, तीसरी औद्योगिक क्रांति, जिसे डिजिटल क्रांति के रूप में भी जाना जाता है, बीसवीं शताब्दी के अंत में हुई, जिसके परिणामस्वरूप औद्योगीकरण में मंदी और पूर्व काल की तुलना में तकनीकी प्रगति हुई। बाइनरी फ्लोटिंग–पॉइंट नंबरों और बूलियन लॉजिक का उपयोग करते हुए Z1 कंप्यूटर का उत्पादन दस साल बाद और डिजिटल विकास के साथ शुरू हुआ। उत्पादन प्रक्रिया में कंप्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग के साथ सुपर कंप्यूटर संचार प्रौद्योगिकियों में अगला महत्वपूर्ण विकास था। मशीनरी के व्यापक उपयोग ने कंपनियों पर अपनी मानव शक्ति की आवश्यकताओं को कम करने का दबाव डालना शुरू कर दिया।

जब उद्योग 3.0 क्रांति के दौरान पहली बार कंप्यूटर को उद्योग में पेश किया गया था, तो यह पूरी तरह से विघटनकारी था। मुझे कुछ ऐसे उदाहरण याद आते हैं जिनमें पारंपरिक मानसिकता वाले लोग कलम और कागज के साथ काम करते हैं, रजिस्टर में एक प्रविष्टि करने से कंप्यूटर पर काम करने का विरोध करते हैं। कई लोगों ने इसे एक अवसर के रूप में लेने के बजाय एक खतरे के रूप में लिया। वर्तमान में, और भविष्य में उद्योग 4.0 के रूप में, कंप्यूटर जुड़े हुए हैं और अंततः मानव समावेश के बिना विकल्पों पर समझौता करने के लिए एक–दूसरे से बात करते हैं।

चौथी औद्योगिक क्रांति

विनिर्माण/उत्पादन और संबद्ध उद्योगों और मूल्य निर्माण

प्रक्रियाओं के डिजिटल परिवर्तन को उद्योग 4.0 के रूप में जाना जाता है। उद्योग 4.0 औद्योगिक मूल्य श्रृंखला की संरचना और नियंत्रण में एक नया चरण है जिसका उपयोग चौथी औद्योगिक क्रांति के स्थान पर किया जाता है।

उद्योग 4.0 शब्द की उत्पत्ति

लोकप्रिय शब्द उद्योग 4.0, जिसे कुछ मामलों में 14.0 या 14 के रूप में भी जाना जाता है, पहली बार 2011 में विनिर्माण प्रक्रियाओं के कम्प्यूटरीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए जर्मन सरकार के प्रयास से इस्तेमाल किया गया था। उसी वर्ष में, हनोवर प्रदर्शनी के दौरान नाम और अवधारणा को सार्वजनिक किया गया था। संपूर्ण एंड–टू–एंड उत्पाद जीवन चक्र और मूल्य धारा में उद्योग 4.0 को विकसित करने के लिए डेटा मॉडल और डेटा–मैपिंग का उपयोग किया जाता है। उद्योग 4.0 में सभी प्रौद्योगिकियों को इस प्रकाश में देखा जाना चाहिए, जिसमें एकीकरण सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

उद्योग 4.0 की प्रमुख प्रौद्योगिकियां

1. 3डी प्रिंटिंग/एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग

एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग एक ऐसा शब्द है जो पारंपरिक प्रकार की निर्माण प्रक्रियाओं जैसे मिलिंग, ड्रिलिंग, बोरिंग आदि में की गई सामग्री को हटाकर नहीं, बल्कि आवश्यकतानुसार सामग्री जोड़कर कुछ बनाने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। 3डी प्रिंटिंग एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है। कंपनियां अब अलग–अलग घटकों के प्रोटोटाइप के बजाय बीस्पोक उत्पादों के छोटे बैचों का निर्माण कर सकती हैं। फायदे में, जटिल डिजाइनों को जल्दी से बनाने की क्षमता शामिल है।

2. स्वायत्त रोबोट

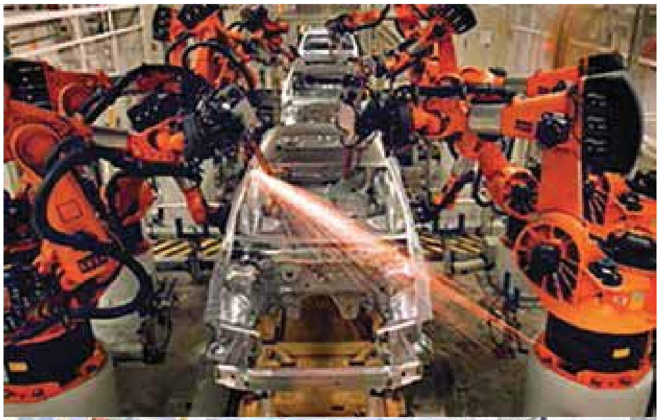

स्वायत्त रोबोट एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं और सुरक्षित वातावरण में लोगों के साथ काम कर सकते हैं। समय बीतने के साथ ये रोबोट कम खर्चीले होंगे और इनमें व्यापक क्षमताएं होंगी। एक स्वायत्त रोबोट, जिसे ऑटोरोबोट या ऑटोबोट के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसा रोबोट है जिसके पास बिना किसी बाहरी प्रभाव के अपने व्यवहार या गतिविधियों में उच्च स्तर की स्वायत्तता है।

3. बिग डेटा एनालिटिक्स

बिग डेटा एनालिटिक्स छिपे हुए पैटर्न, सहसंबंधों और अन्य अंतर्दृष्टि को खोजने के लिए भारी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने की प्रक्रिया है। आज की तकनीक के साथ, आप अपने डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं और व्यावहारिक रूप से तुरंत उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

4. संवर्धित वास्तविकता/ऑगमेंटेड रियलिटी

ऑगमेंटेड रियलिटी एक शब्द है जो प्रौद्योगिकी के उपयोग को संदर्भित करता है। यह प्रणाली कई कार्यों में मदद कर सकती है, जिसमें वेयरहाउस में पुर्जे चुनना और रखरखाव निर्देश मोबाइल उपकरणों तक पहुंचाना शामिल है।

कंपनियां इस प्रणाली का उपयोग श्रमिकों को वास्तविक समय की जानकारी पेश करने के लिए कर सकती हैं जो उन्हें बेहतर निर्णय लेने और अधिक कुशलता से संचालित करने में मदद करती हैं।

5. क्लाउड

एक कंपनी जितनी अधिक उत्पादन–संबंधी परियोजनाओं पर काम करती है, उतने ही अधिक डेटा को स्थानों के बीच साझा किया जाना चाहिए। इस बीच, क्लाउड कंप्यूटिंग तेज और अधिक शक्तिशाली होती जा रही है। मशीन डेटा और एनालिटिक्स को तेजी से क्लाउड पर तैनात किया जाएगा, जिससे उत्पादन प्रणालियों के लिए अधिक डेटा संचालित सेवाओं की अनुमति मिलेगी।

6. औद्योगिक इंटरनेट ऑफ थिंग्स

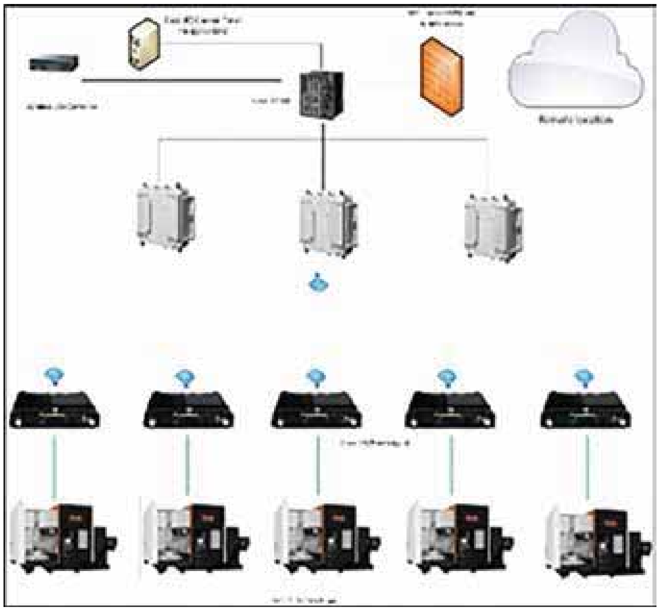

उपभोक्ता वस्तुओं, टिकाऊ सामान, ऑटोमोबाइल, ट्रक, औद्योगिक और उपयोगिता घटकों और अन्य सामान्य वस्तुओं को सेंसर, इंटरनेट कनेक्टिविटी और शक्तिशाली डेटा विश्लेषण क्षमताओं के साथ एकीकृत किया जा रहा है ताकि हमारे काम करने, जीने और खेलने के तरीकों को बदल सकें। वर्ष 2025 तक इंटरनेट और अर्थव्यवस्था पर IoT का वैश्विक आर्थिक प्रभाव 11 ट्रिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है।

7. साइबर सुरक्षा

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उद्योग 4.0 अधिक कनेक्टिविटी और उद्योग मानक संचार प्रोटोकॉल को अपनाने को प्रोत्साहित करता है। नतीजतन, महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रणालियों और विनिर्माण लाइनों को साइबर सुरक्षा खतरों से बचाने की मांग में काफी वृद्धि हुई है। नतीजतन, सुरक्षित, भरोसेमंद संचार, साथ ही परिष्कृत मशीन एक्सेस प्रबंधन और उपयोगकर्ता पहचान सत्यापन महत्वपूर्ण हैं।

8. क्षैतिज और लंबवत प्रणाली एकीकरण

उद्योग 4.0 से कंपनियां, प्रभाग, संचालन और क्षमताएं सभी लाभान्वित हो सकती हैं। क्रॉस–कंपनी के विकास, सार्वभौमिक डेटा–एकीकरण नेटवर्क ने पूरी तरह से स्वचालित मूल्य श्रृंखला को सक्षम किया है।

उद्योग 4.0 का व्यापार पर प्रभाव

कई क्षेत्र नई प्रौद्योगिकियों की शुरूआत का अनुभव कर रहे हैं जो वर्तमान मांगों को पूरा करने के नए तरीके उत्पन्न करते हैं और आपूर्ति पक्ष पर स्थापित औद्योगिक मूल्य श्रृंखलाओं को प्रभावित करते हैं। अनुसंधान, विकास, विपणन, बिक्री और वितरण के लिए वैश्विक डिजिटल प्लेटफॉर्म स्थापित हो रहे हैं। बढ़ती पारदर्शिता, ग्राहक भागीदारी, और उपभोक्ता गतिविधि के नए पैटर्न (अधिक से अधिक मोबाइल नेटवर्क और डेटा तक पहुंच पर निर्भर) संगठनों को यह समायोजित करने के लिए मजबूर कर रहे हैं कि वे कैसे डिजाइन, विज्ञापन और मांग पक्ष पर उत्पादों और सेवाओं को प्रदान करते हैं। कुल मिलाकर, चौथी औद्योगिक क्रांति के व्यवसाय पर निम्नलिखित चार प्रमुख निहितार्थ हैं:

1. ग्राहकों की अपेक्षाओं पर,
2. उत्पाद वृद्धि पर,
3. सहयोगी नवाचार पर, और
4. संगठनात्मक रूपों पर

5. ग्राहक अर्थव्यवस्था के केंद्र में तेजी से बढ़ रहे हैं, चाहे वे उपभोक्ता हों या उद्यम। इसके अलावा, डिजिटल क्षमताओं को अब भौतिक वस्तुओं और सेवाओं में जोड़ा जा रहा है, जिससे उनका मूल्य बढ़ जाता है। नई तकनीक के परिणामस्वरूप परिसंपत्तियां अधिक टिकाऊ और लचीली होती जा रही हैं, जबकि डेटा और विश्लेषण बदल रहे हैं कि उनका प्रबंधन कैसे किया जाता है। इस बीच, ग्राहकों के अनुभव, डेटा संचालित सेवाओं और एनालिटिक्स के माध्यम से परिसंपत्ति प्रदर्शन की दुनिया में सहयोग के नए रूपों की आवश्यकता है। अंत में, वैश्विक प्लेटफार्मों और अन्य नए व्यापार मॉडल के आगमन के लिए लोगों, संस्कृति और संगठनात्मक रूपों पर पुनर्विचार की आवश्यकता है।

उद्योग 4.0 का लोगों पर प्रभाव

चौथी औद्योगिक क्रांति न केवल हम जो करते हैं, बल्कि हम कौन हैं, इसे भी बदल देंगे। गोपनीयता की हमारी भावना, स्वामित्व की हमारी अवधारणाएं, हमारे खरीद पैटर्न, काम और अवकाश के लिए हम जो समय देते हैं, और हम अपनी नौकरियों को कैसे बढ़ाते हैं, अपनी क्षमताओं को विकसित करते हैं, लोगों से मिलते हैं, और रिश्तों को पोषित करते हैं, यह सभी इससे प्रभावित होंगे।

मैं प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं, लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या हमारे जीवन में प्रौद्योगिकी का अपरिहार्य एकीकरण, करुणा और सहयोग सहित हमारी कुछ सबसे बुनियादी मानवीय क्षमताओं को नष्ट कर रहा है। एक अच्छा उदाहरण हमारे स्मार्टफोन के साथ हमारे संबंध हैं। निरंतर संपर्क हमें जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक से वंचित कर सकता है रुकने, सोचने और सार्थक रूप से बातचीत करने का अवसर।

गोपनीयता आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा पेश की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत चुनौतियों में से एक है। हम सहज रूप से समझते हैं कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है, फिर भी अपने बारे में जानकारी रिकॉर्ड करना और साझा करना नए कनेक्शन का एक महत्वपूर्ण घटक है। आने वाले वर्षों में, हमारे डेटा पर नियंत्रण खोने के हमारे आंतरिक जीवन पर प्रभाव जैसी मूलभूत चिंताओं के बारे में बहस और बढ़ेगी। इसी तरह, बायोटेक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्रांतियां जीवन काल, स्वास्थ्य, बुद्धि और क्षमताओं की वर्तमान सीमाओं को पीछे धकेलते हुए, हमें अपनी नैतिक सीमाओं पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करके मानव होने के अर्थ को फिर से परिभाषित कर रही हैं।

निष्कर्ष

उद्योग 4.0, स्मार्ट उद्योगों और औद्योगिक नवाचार, बड़े डेटा, लोगों, प्रक्रियाओं, सेवाओं, प्रणालियों और सूचना के संग्रह, उपयोग और विश्लेषण को संदर्भित करता है। उद्योग 4.0 और स्मार्ट फैक्टरी की अवधारणा साइबर–भौतिक प्रणालियों, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के संयोजन की बदौलत एक वास्तविकता बन रही है। मानव बेरोजगारी के डर के विपरीत, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से विनिर्माण को उच्च उत्पादकता और बढ़ी हुई दक्षता की ओर ले जाया जाएगा। कार्यबल नवाचार और नए कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकता है।

सेंसर प्रौद्योगिकी की घटती लागत और डिजिटल इंटेलिजेंस में वृद्धि से उद्योग 4.0 को अपनाने के नए रास्ते खुल रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ए.आर./वी.आर. और 3डी प्रिंटिंग के बढ़ते अनुप्रयोगों के साथ डिजिटल रूप से जुड़े उद्यम की अवधारणा के साथ उद्योग 4.0 दुनिया भर में उद्योगों के परिदृश्य को बदलने के लिए अग्रसर हैं।

श्री रमेश बहल
प्रबंधक
बीएचईएल, नई दिल्ली

> "अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी।"
>
> – **रामचंद्र शुक्ल**

अनामिका

वो दिन भी कुछ अजीब ही था जब अनामिका अनाथ आश्रम से मिश्रा जी के साथ उनके घर आई थी। मौसम रात से ही ख़राब था। ऐसा लग रहा था जैसे चक्रवाती तूफ़ान दूर कहीं बंगाल की खाड़ी के तट से टकरा गया हो और बारिश उड़ेल रहा हो। तेज गति से हवा बह रही थी जिसमें मिश्रा जी किसी तरह छाते को कस के पकड़े हुए स्टेशन पर किसी लड़के का इंतजार कर रहे थे।

बहुत देर इंतजार करने के बाद जब उस लड़के की कोई ख़बर नहीं आई तो मिश्रा जी ने स्टेशन मास्टर से पूछना उचित समझा। वे स्टेशन मास्टर की तरफ जाने के लिए मुड़े ही थे कि उन्हें थोड़ी दूरी पर एक 10-12 वर्ष की लड़की दिखी, जिसके बाल एकदम मटमैले थे और वस्त्र बुरी तरह से अस्त–व्यस्त। किसी तरह एक टूटे छाते से अपने को मूसलाधार बारिश से वो बच्ची बचाने का असफल प्रयास कर रही थी। एक टक ध्यान से मिश्रा जी ने उस बच्ची को देखा। सूखे होंठ, शून्य परंतु बड़ी बड़ी भूरी आँखें, कंधे से नीचे तक लटके हुए कीचड़ से सने केश और भय से भरा चेहरा। ऐसी छवि नहीं थी जो एक झलक में सम्मोहित कर सके, पर जो मासूमियत, सादगी और भोलापन झलक रहा था उस चेहरे से, उसने यकायक ही मिश्रा जी को अपनी तरफ खींचा। मिश्रा जी के निकट आने पर उस बच्ची ने उन्हें टोकते हुए पूछा– ''क्या आप मिश्रा जी हैं, जो हावड़ा से मुझे लेने आने वाले थे?'' मिश्रा जी ने एक क्षण उस छवि की ओर देखा और फिर होश संभालते हुए उस बच्ची से पूछा– ''तुम कौन हो? तुम्हें मेरा नाम कैसे पता? मैं तो यहाँ एक लड़के को लेने आया था, जो बेलूर के अनाथ आश्रम से आने वाला था।''

इस पर उस बच्ची ने एक पल के लिए मन–ही–मन कुछ सोचा और मिश्रा जी की तरफ देखते हुए बोली– ''मैं ही बेलूर अनाथ आश्रम से आई हूँ। मुझे मिसेस डिसूजा ने आपके लिए भेजा है। उन्होंने कहा था कि हावड़ा स्टेशन पर आप मुझे मिल जाएँगे। मेरा नाम अनामिका है।''

मिश्रा जी थोड़े अचंभित और थोड़े गुस्से में बुदबुदाए– ''लेकिन हमने तो एक अनाथ लड़के के लिए बोला था। भगवान जाने सुमन क्या करेगी ये देख कर कि एक लड़की भेजी गई है?''

मिश्रा जी ने अनामिका से पूछा – ''मिसेस डिसूजा नहीं आई तुम्हारे साथ तुम्हें छोड़ने?''

अनामिका खुद को बारिश से बचाते हुए बोली – ''हाँ मिसेस डिसूजा आने वाली थी। मगर उनको कुछ जरूरी काम आ गया था, तो वे पिछले स्टेशन पर उतर गई। उन्होंने मुझे हावड़ा में उतरने को बोला था और आपके आने की जानकारी भी दी थी।''

मिश्रा जी ने किंकर्तव्यविमूढ हाँ में सर हिला कर अनामिका को इशारे से चलने को कहा। अनामिका मिश्रा जी के पीछे–पीछे एकदम एक अज्ञाकारी बच्चे की तरह चली जा रही थी। परंतु उसके मन में अनेक सवाल थे कि क्या उसे वापस अनाथ आश्रम जाना पड़ेगा क्यूँकि मिश्रा जी को तो एक लड़के की दरकार है? क्या उसका एक परिवार का सपना सपना ही रह जाएगा? क्या उसे कभी माता–पिता का सुख नहीं मिलेगा? वो उस पल को याद कर रही थी जब उसे मिसेस डिसूजा ने जानकारी दी थी कि एक परिवार को उसकी जरूरत है और वो हावड़ा जा रही है। एक ही पल ने मानो उसकी जिंदगी बदल दी हो। कितने सपने देख लिए थे उस पल अनामिका ने और खुद से वादा भी किया था कि वो अब कभी नहीं रोएगी और अपने नए माता–पिता को बहुत प्यार और सम्मान देगी।

इस छोटी उम्र में भी अनामिका काफी समझदार थी। मिश्रा जी की नाराजगी अच्छे से भाँप चुकी थी। फिर भी हिम्मत कर उसने माहौल बदलते हुए बात–चीत शुरू की। कार से हावड़ा ब्रिज और हुगली नदी का नजारा देख आनंदित हो बोली– ''मिश्रा जी ये नदी कितनी बड़ी है और ये पुल कितना सुंदर। मैंने तो कभी ऐसा कुछ देखा ही नहीं है। हमें अनाथ आश्रम से बाहर नहीं निकलने दिया जाता है न। निकालते भी है तो बस कुछ काम से। मैं ऐसे कभी बिना किसी काम के नहीं घूमी हूँ। मिश्रा जी आप जानते है मुझे घूमना बहुत पसंद है। बिना किसी मकसद के बस प्रकृति को निहारते हुए, चुप चाप शांत मन से, बस यूँ ही, जब ना कोई भविष्य की चिंता हो, ना वर्तमान का डर......।'' बोलते बोलते अचानक से अनामिका चुप हो गई, जैसे किसी सपने में खो गई हो। मिश्रा जी ने यद्यपि मुड़ के नहीं देखा, पर अनामिका की अचानक चुप्पी उन्हें कुछ देर के लिए तंग कर गई। वे स्वयं से अनामिका की बातों को पूरा करने की कोशिश करने लगे, परंतु असमर्थ रहे। उन्हें डर भी था कि कहीं ज़्यादा वार्तालाप से उनकी पिता सुलभ भावना जाग ना जाए, जो उनकी पाखी के मौत के बाद जैसे सो गई थी।

मिश्रा जी एक संकीर्ण गली के सामने कार से उतरे और अनामिका भी उनके साथ उतर गई। टैक्सी वाले को पैसे दे

वे गली में अंदर जाने लगे। बारिश अभी रुक चुकी थी, फिर भी अनामिका ने टूटे छाते को ओढ़ ही रखा था। कुछ सोचते हुए अनामिका भयग्रस्त हो बोली– ''मिश्रा जी क्या आप सच में मुझे वापस भेज देंगे?''

उस बच्ची के उस मासूमियत भरे सवाल ने जैसे मानो मिश्रा जी को सम्मोहित ही कर दिया हो। उन्हें कुछ समझ नहीं आया कि वे क्या बोले? एक तरफ उन्हें मिसेस मिश्रा की प्रतिक्रिया का भय था जिन्हें एक लड़के की जरूरत थी जो थोड़ा बहुत घर–बाहर का काम भी देख सके, तो दूसरी तरफ उस मासूम बच्ची में बाल सुलभ सच्चाई और ईमानदारी देख अपनी पाखी का स्मरण होने लगा था। मिश्रा जी एकदम नहीं समझ पा रहे थे कि ये कैसा भाव था और वो भी एक अनाथ बच्ची के लिए जिस से वे कुछ 2 घंटे पहले ही तो मिले है। परंतु कहीं ना कहीं वे जानते थे कि वे उस बच्ची को वापस नहीं भेजना चाहते थे, उसे संजोह के अपने पास रखना चाहते थे सदा के लिए..... अचानक ही उनके मुख से निकल पड़ा – ''पाखी की तरह इसे नहीं जाने दूँगा कहीं इस बार।'' मिश्रा जी अभी तक तो खुद भी इस नए एहसास का मतलब नहीं समझ पा रहे थे।

घर पहुँच कर दरवाजा खटखटाया तो मिसेस मिश्रा ने तुरंत उठ कर दरवाजा खोला और एक मासूम कीचड़ में सनी लड़की को देख आश्चर्यचकित हो उठी। तीखी नजरों से मिश्रा जी को इशारे में हाथ हिला कर पूछी कि ये कौन है? मिश्रा जी ने इशारों में ही बोला कि पहले इसे अंदर ले जाओ फिर पूरी बात बताता हूँ। मिसेस मिश्रा ने पैर–हाथ धुलवा कर अनामिका को अंदर एक कुर्सी दिखाते हुए बैठने को कहा। फिर मिश्रा जी के तरफ मुड़ी। मिश्रा जी ने मिसेस मिश्रा के तरफ देखते हुए कहा– ''इस लड़की को अनाथ आश्रम से मिसेस डिसूज़ा ने भेजा है। शायद उनसे सुनने में गलती हो गई थी और लड़के के बदले लड़की भिजवा दी। पर विश्वास करो सुमन इस में मेरी कोई गलती नहीं है। अब हावड़ा स्टेशन पर इतनी बारिश में कैसे अकेले छोड़ देता इस मासूम को, इसी लिए संग लेते आया। मिसेस डिसूज़ा से बात कर के हम इसे वापस भेज देंगे।'' इस से आगे कुछ नहीं बोल सके मिश्रा जी और ना जाने क्यूँ आख़िरी वाक्य बोलते वक्त उनकी आँखें नम हो चली थे। मिसेस मिश्रा समझ चुकी थी कि उस बच्ची ने मिश्रा जी के पुराने घाव को छेड़ा भी है और वहीं मरहम भी लगा सकती है। मिसेस मिश्रा के मुँह से अचानक ही निकल पड़ा– ''एकदम आपकी पाखी जैसी है ना ये।''

उधर से अनामिका के नाम की घोषणा हुई और उसे स्टेज पे बुलाया गया। माइक को हाथ में लेते हुए अनामिका अपने माता–पिता को आँखों से धन्यवाद और नमन करते हुए बोलना शुरू करती है– ''आप सभी को मेरा नमस्कार। इस अनाथ आश्रम से बहुत गहरा नाता है मेरा। यहाँ अपने जीवन के 10 वर्ष बिताए है मैंने, पर मैं आप सब को बताना चाहती हूँ कि ''आप सब के लिए भी एक मिश्रा जी और सुमन जी जरूर आएँगे। आप सब को भी माता–पिता मिलेंगे और वो एक पल का सपना सच होगा। बस हौसला रखिए।''

और फिर गृह मंत्री ने उसकी सफलता और उपलब्धियों के लिए डॉक्टर अनामिका को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया। पर आज अनामिका को पाखी की याद कुछ ज्यादा ही आ रही थी। उधर से मिसेस मिश्रा ने आवाज लगायी– ''पाखी चलो बेटा, मिश्रा जी बुला रहे हैं।''

श्रीमती कविता झा
वरिष्ठ अभियंता
बीएचईएल, नई दिल्ली

''मुस्लिम शासन में हिंदी फारसी के साथ–साथ चलती रही पर
कंपनी सरकार ने एक ओर फारसी पर हाथ साफ किया तो दूसरी ओर हिंदी पर।''

– **चंद्रबली पांडेय**

‘‘कवि बहुत लाचार हूँ मैं’’

फैली दहशत की काली चादर, विपदा देख हुआ मन कादर।
कादर मन का बस एक आधार– दैव दैव बस दैव पुकार।
कवि बहुत लाचार हूँ मैं।

हर नंदन में फैला क्रंदन, हरदिश अहर्निश हो रहा बस केवल मातम व शोर।
अपना अपनों का साथ छोड़, पता नहीं वे गए किस ओर?
इस महामारी में, हाँ बड़ी इस विपदा भारी में,
बिखरा चहुँओर है शव का ढेर।
सिद्ध–गिद्ध भी नाच रहे, बन के जीवन–वन में छद्म मोर।
नमन करूँ उन गिद्धों को डरकर, रहम करो अब बस बची है चादर।
चाहे ले लो सबकुछ मेरा, अब बस जीवन की दरकार है।
कवि बहुत लाचार हूँ मैं।

अर्धनग्न लेखनी है मेरी, स्याही सूख रही है नित दिन,
एक पन्ने की कॉपी मेरी, उड़ती रहती रोज पवन बिन।
रोज सोचता कर दूँ कुछ ऐसा, खुद डॉक्टर, खुद ही विज्ञानी,
बन जाऊँ देवत्व साधन शक्ति जैसा। पर करूँ क्या? कवि बहुत लाचार हूँ मैं।
फिर जाऊँ उस गुरु के पास, हों चाहे थल–जल में या हों फिर समाधित आकाश।
एक सिद्धि मैं ले पाऊँ,
कलम से दवा, कलम से टीका, कलम से जिंदगी ले आऊँ।
जब तक नहीं मिलता यह इल्म हमें, तब तक रहूँ डर घर भीतर मैं।
मुँह पट्टे से ढँककर, अदृश्य विषाणु से बचकर करता रहूँ मैं जतन निरंतर।
एक नवल सोच समरथ की अब बहुत दरकार है।
पर करूँ क्या? कवि बहुत लाचार हूँ मैं।

कितना भी लाचार हूँ मैं, परोपकारी प्रकार हूँ मैं,
हिम्मत की है कमी नहीं, सह सकता हर प्रहार हूँ मैं।
कलम, कला किलोलें करता, हर मन में विश्वास है भरता
कवि कर्म सतत हूँ करता, देवांश दैवी करतार हूँ मैं
हूँ निरूपाय, पर सतत जो करता जन जागरण का एक उपाय हूँ मैं।

श्री प्रणव कुमार सिंह
उप अभियंता
बीएचईएल

आम का पौधा

माँ माँ देखों ये मैं आज क्या लाई हूँ। स्कूल से आते ही अनु चिल्ला चिल्ला कर अपनी माँ को बता रही थी आज स्कूल में निंबंध प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला था, और माँ माँ बताऊं आज ना मैंने पर्यावरण संरक्षण पर निबंध लिखा था। हमारे प्रधानाचार्य को मेरा ही निबंध सबसे अच्छा लगा था। माँ बोली अरे पहले वो तो दिखाओ जो तुम्हें पुरस्कार मिला है। अनु ने पुरस्कार अपने पीछे छुपा रखा था। माँ के कहने पर उसने माँ को बहुत ही प्रसन्नता के साथ पुरस्कार दिखाया। माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। वो एक सुंदर सा आम का पौधा था जो कि एक छोटे से आर्कषक दिखने वाले गमले में लगा हुआ था। माँ ने कहा अनु यह तो आपके स्कूल वालों ने बहुत ही अच्छा पुरस्कार दिया है। अब यह तुम्हारी जिम्मेदारी है कि तुम इसका रोज अच्छे से ख्याल रखोगी। जैसे आपको रोजाना जीने के लिए हवा, पानी और खाना पीना चाहिए वैसे ही इसको भी रोजाना पानी, हवा, धूप और खाद चाहिए। अब यह तुम पर है कि तुम इसका कितना ख्याल रख पाती हो। जब यह पौधा बडा हो जाएगा तो इसको गमले के बजाय जो सामने खाली जगह है, वहां पर लगा देना। अनु ने माँ को कहा कि आप चिन्ता न करें, मैं इसका पूरा ख्याल रखूंगी। उस दिन से अनु ने उस गमले में लगे पौधे को अपने कमरे में ही खिडकी के पास रख दिया ताकि उसको ताजी हवा, धूप मिलती रहे। रोजाना आवश्यकतानुसार वह उसमें पानी भी देती थी।

एक दिन सामने सड़क पर एक माली जा रहा था। अनु ने उसको आवाज देकर रोका और अपने घर ले आई और अपने आम के पौधे को दिखाकर उससे उसके लिए खाद खरीद ली और इसको खाद कब कब डालनी है यह भी जान लिया कि अनु अब अपने पौधे की देखभाल अपने घर के एक सदस्य की तरह कर रही थी। अनु के घर में उससे सब खुश थे। उसके पापा ने कहा था कि इस पौधे की देखभाल के लिए यदि अनु को उनसे कोई सहायता चाहिए हो तो वह उन्हें कह सकती है। वह पौधा सबके लिए आर्कषण का केन्द्र बन गया था। वह लोग उसको रोज रोज बढता हुआ देख रहे थे। एक दिन माँ ने देखा कि गमले में कुछ दरार आ गई है और उसमें से पानी बाहर निकल रहा है। माँ ने अनु को बताया कि अब यह पौधा इतना बड़ा हो गया है कि इसको गमले में रखना मुमकिन नही है। ऐसा करो कि इसको सामने वाले खाली प्लॉट में लगा दो। तुम यहां से इस पर नजर भी रख सकती हो और वहां यह खुब फलेगा भी। न चाहते हुए भी अनु उस

पौधे को सामने वाले प्लॉट में लगा कर आ गई। अब वो अपनी खिड़की के पास ही बैठा करती थी। अरे यह क्या, एक गाय आकर उस पौधे के पत्ते खाने लगी। अनु दौड कर बाहर गई और शोर करके उसने गाय को भगाया। गाय के जाते ही वह उस पौधे के साथ लिपटकर रोने लगी। अगर आज मैं न देखती तो गाय यह पूरा पौधा ही खा जाती। उसका मन अब घर आने को नहीं हो रहा था। माँ ने देखा कि अनु बहुत देर से अपने कमरे में नही है तो उसको खोजने लगी और पाया कि अनु तो अपने पौधे के साथ लिपट कर सो रही थी। माँ को चिपको आंदोलन की याद आ गई जो उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र के चमोली जिले के रेनी गांव में 1973 में शुरू हुआ था। उस समय उत्तराखंड की पहाड़ियों से लकडी के ठेकेदारों द्वारा बडे पैमाने पर पेड़ों को काटा जा रहा था। तब जब पेड़ काटने को ठेकेदार के लोग आते थे तो वहां के स्थानीय लोग पेड़ों के साथ चिपक जाते थे और पेड़ काटने नही देते थे। इस आंदोलन को श्री चंडीप्रसाद भटट और श्री सुंदर लाल बहुगुणा जी ने शुरू किया था। माँ ने देखा कि अनु भी बिल्कुल वैसा ही कर रही है। पौधे के साथ लिपटे रहने के कारण कोई भी गाय या अन्य जानवर अब इसके पत्ते खाने को नही आ पा रहे थे। माँ ने अनु को उठाया और कहा कि घर चलो तो अनु तैयार नही हुई कि फिर से गाय आएगी और मेरे पौधे को खा जाएगी। बहुत समझाने पर भी अनु घर जाने को तैयार नही हुई तो माँ ने कहा कि क्या सारी रात यहीं बैठी रहोगी तो अनु उदास हो गई। उसे समझ नही आ रहा था कि वो अपने पौधे की रक्षा कैसे करे। इतने में उसके पापा ऑफिस से घर वापिस आए तो देखा कि अनु और उसकी माँ तो बाहर सामने खाली प्लॉट पर ही है। वो भी वहीं पर आ गए और पूछा कि वो लोग वहाँ क्यो खड़े हैं। तो माँ ने सारी बात उनको बता दी और कहा कि अनु अब घर जाने को राज़ी नही है। अनु के पापा ने कहा कि उन्होंने अनु को वायदा किया था कि इस

पौधे को बड़ा करने के लिए उनसे कभी मदद चाहिए हो तो वह उनसे कह सकती है। अनु तुमने तो मुझे नहीं कहा लेकिन मैं इसको सुरक्षित रखने के लिए तुम्हारी मदद करूंगा। मैं अभी बाजार जाकर इसके लिए चारों ओर से लगने वाला एक लोहे का पिंजरा ला देता हूं ताकि कोई जानवर इसको खा न सके। अनु बहुत खुश हो गई और मेरे अच्छे पापा कहते हुए उनसे लिपट गई। उसने कहा कि पापा जब तक आप वह जाल इसके आसपास नहीं लगा देते मैं घर नहीं जाऊंगी। उसके पापा उसी समय एक गोलाकार जाल ले आए और इस पौधे के चारों ओर लगा दिया। अब यह पौधा सभी जानवरों से सुरक्षित था। अनु अब घर आ गई।

दिन बीतते गए और पौधा भी बड़ा हो गया। एक दिन अनु स्कूल से वापिस आई तो देखा कि सामने वाले खाली प्लॉट पर एक कोने में कोई पूजा हो रही है और 8 से 10 लोग वहां बैठे हैं। थोडी देर में वहां पूजा खत्म हो गई और वहां से एक अंकल और आंटी अनु के घर आए और उन्हें कुछ मिठाई दी। अनु समझी नहीं की एक खाली प्लॉट पर पूजा क्यों की और वो लोग किसी मंदिर क्यों नही गए पूजा करने। उन्होंने अनु की माँ को बताया कि उन्होंने यह प्लॉट खरीद लिया है और जल्द ही वो वहां अपना घर बनाएंगे। अनु की माँ ने उन्हें चाय पानी पिलाई और उनको हर प्रकार के सहयोग का वायदा किया। उसके बाद वो लोग चले गए।

कुछ दिन बाद अनु ने देखा कि वहां बहुत से लोग आ गए है और उस जमीन की खुदाई शुरू कर दी है। अनु का ध्यान अपने पौधे की तरफ ही था जो कि अब बड़ा हो चुका था। उस दिन वो लोग वहां से अपना काम खत्म करके शाम को चले गए। अनु ने राहत की साँस ली कि उसका पौधा सही सलामत है। अगले दिन अनु के स्कूल में पीटीएम थी और उसके पापा और माँ भी स्कूल आए थे। अनु की टीचर ने उनको अनु के बारे में जो बताया उसे सुनकर उनका सीना चौडा हो गया। टीचर ने कहा कि यहां अनु ने अकेले अपने दम पर तकरीबन 55 पौधे लगाए हैं और रोज उनकी देखभाल भी करती है। अब वो पौधे काफी बड़े भी हो गए है। अनु के लगाए पौधे पर्यावरण संरक्षण में तो सहायक होंगे ही साथ ही आने वाले वर्षों में खूब फल भी देंगे। जो भी इनकी छांव में बैठेगा और जो भी इनके फल खाएगा, अनु को दुआएं ही देगा। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे अनु ने पर्यावरण पर निबंध लिख कर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। अनु के पापा और माँ बहुत खुश थे, तो स्कूल के बाद वो उसको घुमाने ले गए और रात का खाना बाहर ही खाकर आए। जब वो घर आए तो देखा कि सामने न तो पौधा है और न ही उसके आसपास लगाया हुआ जाल जो अनु के पापा लाए थे पौधे की सुरक्षा के लिए। अनु के लिए तो काटो तो खून नहीं वाली स्थिति हो गई। उसने रो रो कर पूरा घर सर पर उठा लिया और उसको संभालना उसके माँ और पापा के बस में नही हो रहा था। अनु पूरे मोहल्ले का चक्कर लगा आई लेकिन उसे अपना पौधा कहीं नही दिखा। अगले दो दिन त्योहारों के कारण स्कूल की छुटटी थी और सामने वाले प्लॉट पर भी कोई मजदूर काम करने नही आया था नहीं तो वह उन्हें ही पूछ लेती कि उन्होंने उसका पौधा देखा है क्या। अनु के पापा और माँ भी उदास हो गए थे। अनु की तरह उन्हें भी उस पौधे से प्यार हो गया था। अनु ने खाना पीना छोड़ दिया। कोई उसके सामने उस पौधे को उखाडता तो वह वहीं चिपको आंदोलन शुरू कर देती लेकिन पौधा तो कोई उनके पीछे से निकाल कर ले गया। अब अनु का मन कहीं नहीं लग रहा था। पापा को बोली को चलो पुलिस में शिकायत करते है कि हमारा पौधा चोरी हो गया है। सभी पडोंसियों को पूछा कि उन्होंने किसी को पौधा निकालते हुए देखा है क्या। सभी ने कहा कि उन्हें इस बारे में कुछ नही पता। अनु रोए जा रही थी और रोए जा रही थी। उसके माँ और पापा को समझ नही आ रहा था कि वो उसको कैसे मनाएं और कैसे उसका रोना रोकें। अनु की हालत ऐसे हो गई थी जैसे जल बिन मछली। जैसे मछली जल से बाहर आ कर छटपटाती है वैसे ही अनु छटपटा रही थी, उसको बिल्कुल भी चौन नही था। कभी अपनी खिड़की को, कभी खाली पड़े खडडे को देखती। कभी घर के अंदर तो कभी घर के बाहर। उसकी यही स्थिति हो गई थी। उसके माँ पापा अपने को बहुत लाचार महसूस कर रहे थे और ऐसे में उसकी कोई मदद भी नही कर पा रहे थे।

छुटिटयों के बाद बहुत मुश्किल से उन्होंने अनु को स्कूल भेजा। स्कूल में अनु का रो रोकर बुरा हाल था। उसकी टीचर ने घर पर फोन किया कि क्या आपने अनु को कुछ मारा या घमकाया है किसी बात के लिए कि उसका रोना रूक ही नही रहा है। अनु के माँ ने सारी बात उनकी टीचर को बताई। टीचर ने अनु को समझाया कि देखो यहां तो तुमने कितने पौधे लगाए हैं, कोई बात नहीं जो एक पौधा कोई ले गया। लेकिन अनु का रोना नहीं रूका। आज उसका मन घर जाने को भी नहीं कर रहा था। स्कूल की छुटटी होने पर घर जाना ही पड़ा। घर पहुंचकर उसने देखा कि जो आंटी अंकल उनके घर पूजा की मिठाई देने आए थे वहीं बैठे हुए थे।

और मां से हँस–हँस कर बाते कर रहे थे। अनु ने उनको नमस्ते किया तो उन्होंने अनु को कहा कि वह उन्हें माफ कर दे। अनु को समझ नही आ रहा था कि वो उससे क्यों माफी मांग रहे हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें जहां पौधा लगा था वहां

की खुदाई करवानी थी क्योंकि वहां उनके घर की दीवार आ रही थी। चूंकि आप लोग उस दिन यहां नहीं थे और हमने दोपहर तक आपके स्कूल से आने तक का इंतजार किया कि आपको बता कर ही हम पौधा वहां से हटाएंगे लेकिन उस दिन आप रात तक नहीं आए थे। अनु को याद आया कि स्कूल पीटीएम के बाद उसके माँ पापा उसको घुमाने ले गए थे और रात का खाना वह बाहर से खा कर लौटे थे। उन अंकल ने बताया कि उन्होंने वह पौधा अभी कहीं और लगा दिया है। लेकिन एक बार उनका घर बन जाए तो वह उस पौधे को घर के सामने ही लगा देंगे। तब तक वही लोग उसकी देखभाल भी करेंगे। अनु रोने लगी और उसने अंकल और आंटी को धन्यवाद कहा और गले लगा लिया। अनु का पर्यावरण के प्रति प्यार देखकर वो लोग भी बहुत खुश थे और उन्होंने अनु को वायदा किया कि वो भी उसकी तरह ही खूब पौधे लगाया करेंगे। आज अनु की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। आज उसको उसका खोया हुआ प्यार मिल गया था जो था उसका प्यारा आम का पौधा।

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक–राजभाषा
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

"जल संरक्षण"

सृष्टि की रचना में है तीन महत्त्वपूर्ण अंग वायु, थल और जल।

कुदरत की रहमत से हैं सुंदर हमारा कल, आज और कल।।

बचपन से ही हमें सिखाए जा रहे हैं माता–पिता, शिक्षक, दादी, नानी

मानव जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है भाई पानी।।

पानी से गुलजार है यह दुनिया पूर्ण होते हमारे त्योहार, ईद और दीवाली।

जीवन में नए रंग है भर जाते हैं जब आती हैं होली खुशियों वाली।।

कण–कण हर पल हर क्षण वनस्पति पशु तथा मानव की जरूरत है पानी।

जीवन में जल (नदी) को मां का दर्जा भी देने की बात हम सब ने है मानी।।

इतना ऊंचा स्थान होने पर भी मानव कर रहा था और गलती पर गलती। इसका नुकसान उठाने को मजबूर हो रहे हैं आप सब और पीढ़ी अगली।।

हमने की है पानी की बर्बादी नहीं उठाया जल संरक्षण करने पर कोई ठोस कदम।

उसी का नतीजा है कि पानी की किल्लत उठा रहे हम कदम–दर–कदम।।

बूंद–बूंद को मोहताज बनने को क्यों हो हम मजबूर। आओ कुछ ठोस कदम उठाए, हर बाधा को दूर।।

जल ही जीवन है यह मंत्र तो हम सब जानते हैं। फिर गंभीरता से इसके ऊपर गौर क्यों नहीं फरमाते हैं।।

बूँद–बूँद को न तरसे हम आप और देश हमारा।

जल संरक्षण को बनाएं हम उद्देश्य हमारा।।

छोटे–छोटे उपायों से करें जल संरक्षण की शुरुआत।।
जीवन उससे जगमग होगा होगी नए भारत की सुप्रभात।।

जल की किल्लत से ना हो झगड़े जल के लिए ना कोई तरसे।

आओ जल संरक्षण कर, यह जल की कृपा हम सब पर बरसे।।

सृष्टि पाण्डेय
सहायक प्रबंधक(मा.सं.प्र.)
इरकॉन इन्टरनेशनल लिमिटेड

बरसाती कुकुर

टिन की छत पर मूसलाधार बारिश की पड़ती बूँदों की तेज आवाज और गली के मुहाने पर उस छत के नीचे बारिश से बचने के लिए बैठे अलग अलग नस्ल और रंग के तीन–चार कुत्ते उस शोर में भी बिलकुल चुप – बिना किसी पर भोंके, अपने सर को पैरों पे और अपनी दुम दबाए बता रहे थे कि शायद ये बारिश शहर की आग को बुझा पाए... परंतु ये इस सत्य से अनभिज्ञ थे कि बारिश उनकी गली के आसपास तक ही है और बाकी शहर में सिर्फ तेज हवाएं चल रही हैं... और हवाएं आग बुझा नहीं सकती.... इस दृश्य और सोच से आलोक अंदर तक सिहर गए... पसीने की नमी उन्हें अपने चेहरे पर महसूस हुई... वो बालकनी से उठकर अंदर कमरे में आकर आरामकुर्सी पर लेट गए.....

आलोक कुमार सिन्हा दिल्ली में एक नामी सरकारी ऑटोमोबाइल कंपनी में जनरल मैनेजर थे.... ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडलिस्ट, मार्केटिंग में एमबीए, 20-22 साल का दाग रहित करियर... और ये नई स्पेशल पोस्टिंग ऑन डेपयूटेशन.. .वो भी जनगणना कार्यालय में... करूँगा क्या वहाँ ?... करियर ख़त्म करना चाहते हैं सालेऽऽऽ... आलोक मन ही मन बोले डायरेक्टर साहब ने पर्सनली फोन कर आलोक को इस के बारे में बताया था... एक बार तो आलोक का मन हुआ कि पूछ ले उनसे कि ये स्पेशल पोस्टिंग ईनाम है या सजा... फिर कुछ सोच कर चुप हो गए... यदि नई डीलरशिप इनके हिसाब से दे दो तो सब ठीक वरना निकलो... बिलकुल मन नहीं था जाने का जनगणना में... इसी साल प्रमोशन भी होनी थी... डायरेक्टर हो जाना तो लगभग पक्का ही था आलोक का... यंगेस्ट डायरेक्टर होता... मना करने का ऑप्शन होता तो बिल्कुल नहीं जाते... कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, क्या ना करें आलोक डीलरशिप अलॉटमेंट फाइल बिना साइन किए, एक महीने की छुट्टी लेकर अपने घर लखनऊ आ गए थे...

आज 9 दिन हो गए थे उन्हें लखनऊ आए पर ना किसी डायरेक्टर का फोन आया ना चेयरमैन का... वैसे दिनभर फोन बजा बजा कर कान फोड़ते रहते थे.... सोचते होंगे अच्छा है निकल जाएगा रास्ते का काँटा... सालेऽऽऽऽ चमचों की फौज बनी हुई है .....आराम कुर्सी पर लेटे–लेटे आलोक की आँख लगने ही वाली थी कि मोबाइल पर बनर्जी दादा की कॉल आ गई... दादा ऑफिस में कार्मिक प्रमुख फोन उठाते ही बोले... आलोक सर, ऑफिस में विजिलेंस रेड हुई है ... न्यू डीलरशिप अलॉटमेंट मामले में... उसकी फाइल कहाँ है?... चेयरमैन साहब पूछ रहे हैं... दादा तो एक ही साँस में सब बोल कर हल्के हो गए पर उसी साँस में मानो मनों टन बोझ उनपे लाद गए... किसी तरह खुद को सम्भाल कर आलोक इतना ही बोल पाए कि फाइल तो उनके ड्रॉअर में ही है... ठीक ठीक ठीक बोल दादा ने फोन काट दिया... आलोक अभी संभल भी ना पाए थे कि एक एक कर के तीनों डायरेक्टर्स का फोन आ गया... सभी का एक ही सवाल आलोक जी, फाइल पे साइन तो नहीं किया था ना? आलोक की एक क्षण ने सबके लिए संजीवनी का काम कर दिया था ....कुछ ही मिनटों में चेयरमैन साहब का भी फोन आ गया... आलोक, कल ऑफिस जॉइन करो, मंत्री जी के साथ मीटिंग है... अलॉटमेंट केस पर... और हाँ वो मंत्री जी ने तुम्हारा ट्रांसफर कैंसिल कर दिया है.... जी सर.... थैंक यू सिर्फ इतना ही बोल पाए आलोक जी...

बाहर से बारिश की बूँदों की तेज आवाज़ आनी बंद हो गई थी पर उन कुत्तों ने फिर भौंकना शुरू कर दिया था...

दीपक खुराना
कार्यकारी गोपनीय सचिव–उत्तरी अंचल
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

> "जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।"
>
> **– (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह**

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना भारत को एक विकसित देश बनाने की दिशा में, हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदृष्टि और संकल्प साहस का परिचायक है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना उस समय व्यक्त की जब पूरी दुनिया कोरोना महामारी से लड़ रही थी और विश्व की सारी अर्थव्यवस्थाएं बुरी तरह प्रभावित थी. माननीय प्रधानमंत्री जी ने उस समय अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए आह्वाहन किया कि हमें आपदा में घबराने की जगह "आपदा में अवसर" की तलाश करनी चाहिए। यह समय "आत्मनिर्भर भारत" की संकल्पना को यथार्थ रूप देने का है जिससे भारत विश्व पटल पर एक निर्माणकर्ता और निर्यातकर्ता के रूप में स्थापित हो सकें।

आत्मनिर्भर भारत की झलक हमें बहुत पहले, हिंदी के प्रख्यात लेखक, निबंधकार श्री भारतेंदु हरिश्चंद्र की निम्न पक्तियों में दिखाई देती हैः—

''निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल''

अर्थात् अपनी भाषा का विकास ही अन्य सारे विकास का मूल मन्त्र या आधार है। इस बात का प्रमाण हमें चीन, जापान या फ्रांस, इजरायल आदि देशों से मिलता है जंहा अनुसंधान, शिक्षा आदि का आधार उनकी अपनी मूल भाषा है। हमारे देश का दुर्भाग्य कहे या इच्छा शक्ति की कमी जिसकी वजह से आज भी हम अंग्रेजी भाषा पर बहुत ज्यादा निर्भर है। आज भी किसी आदेश, प्रश्न पत्र या गजट आदि के अंग्रेजी रूप को ही प्रामाणिक माना जाता है। इस तरह हमें सही अर्थों में केवल राजनैतिक आजादी मिली है हम आज भी सांस्कृतिक, भाषाई गुलामी के शिकार है, जो हमारे नेतृत्व की इच्छा शक्ति की कमी को उजागर कराती है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सांस्कृतिक, भाषाई आजादी को महत्व दिया है और इसीलिए इस दिशा में कई प्रयास शुरू किए है। हिंदी भाषा को देश की संपर्क, शिक्षा और अनुसंधान की भाषा बनाने का प्रयास सराहनीय है। इसी क्रम में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन के आयोजन की शुरुआत पिछले वर्ष 2021 से वाराणसी में किया गया, जो वार्षिक रूप से मनाया जा रहा है।

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना बहुत ही व्यापक और बृहद है। यह समग्र रूप से समाज और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों से सम्बंधित है। शिक्षा सेवा क्षेत्र निर्माण—विनिर्माण, मशीनरी, अनुसंधान, आयुध, अंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में अत्मनिर्भरता का लक्ष्य रखा गया है जिससे भारत आने वाले वर्षो में इन क्षेत्रों में एक प्रमुख निर्यातकर्ता देश बन सके। आत्मनिर्भर भारत से देश मे रोजगार अवसरों के साथ आधुनिक तकनीक का भी विकास होगा। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्र शामिल हैः—

1. डिजिटल और डाटा अनुप्रयोग
2. रक्षा क्षेत्र
3. परिवहन
4. अन्तरिक्ष
5. नौ परिवहन
6. निर्माण एवं विनिर्माण
7. नवीकरणीय एवं अक्षय ऊर्जा
8. अवसंरचना इत्यादी।

वर्तमान समय में भारत का व्यापर संतुलन नकारात्मक है क्योंकि हमारा आयात, निर्यात की अपेक्षा ज्यादा है, और किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए व्यापर असंतुलन बहुत ही चिंता की

बात होती है। व्यापार असंतुलन की वजह से देश में पूँजी की कमी होने से विकाश कार्यों में बाधा आती है और साथ ही साथ बेरोजगारी, मंहगाई इत्यादी भी बढती है। व्यापार असंतुलन से देश का बजट घाटे का बजट होता है। व्यापार असंतुलन को कम करने या खत्म करने के लिए आवश्यक है कि आयात की तुलना में निर्यात को ज्यादा किया जाए। व्यापार संतुलन से विदेशी मुद्रा भण्डार भी बढ़ता है जो कि किसी भी अर्थव्यवस्था या देश को सशक्त बनता है। आज के विकशित देशों का व्यापार संतुलन उनके पक्ष में होने की वजह से वे सशक्त है और सामाजिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक पूँजी उपलब्ध है।

आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत ''मेक इन इंडिया'' एक महत्वपूर्ण कदम है। आज मेक इन इंडिया के अंतर्गत कई क्षेत्रो में जैसे रक्षा रेल मेट्रो अंतरिक्ष, सूचना तकनीकि सेवा क्षेत्र इत्यादी में नए नए उद्योगों और प्रतिष्ठानों, स्टार्टअप की शुरुआत हुई है जिससे कई लोगो को रोजगार के साथ विदेशी मुद्रा का अर्जन भी हो रहा है।

रेल परिवहन क्षेत्र में नई तकनीकि पर आधारित द्रुत गति की ''वन्दे भारत ट्रेन सेट'' का भारत में बनना मेक इन इंडिया पहल की बहुत बड़ी उपलब्धि है। मेट्रो के लिए आज मेट्रो कार का निर्माण देश के अन्दर किया जा रहा है। भारतीय रेलवे अभी नेक्स्ट जनरेशन वन्दे भारत ट्रेन के लिए टेंडर किया है और लगभग 400 वन्दे भारत ट्रेन सेट का निर्माण अगले 4–5 साल में देश के अन्दर किया जायेगा। ट्रेन इंजन का निर्माण भी देश के अन्दर किया जा रहा है। इससे न केवल देश की जरूरत पूरी होगी जबकि निर्यात का मार्ग भी प्रस्थत होगा। इसी तरह रक्षा एवं वैमानिकी में नए प्लांट स्थापित किए जा रहे है.

आज के भूमंडलीकरण, भौतिकता तथा आधुनिकता के इस दौर में, सेवा और निर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना किसी भी अर्थव्यस्था के लिए चुनौती है और इस चुनौती का सामना हम सभी को कराना है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना बहुत ही व्यापक और देश की प्रगति के लिए आवश्यक कदम है। आत्मनिर्भर भारत की सफलता से भारत विश्व के विकसित राष्ट्रों में शामिल होने की ताकत रखता है।

दया राम मीणा
प्रबंधक मानव संसाधन
बी ई एम एल लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

''शहर''

दौड़ती जिंदगी सड़कों पर, भागम भाग हर तरफ है
रात में भी दिन है, शहर में हर कोई व्यस्त है
ऊँची ऊँची इमारतें है तो, घास फूस की झोपड़ी भी
चमकती चौड़ी सड़कें है तो, गड्डों से भरी पगडण्डी भी
5 स्टार चमकते होटल हैं तो, ठेलों पर चलती जिन्दगी भी

कारों में घूमतें जानवर हैं तो, नंगे पैर टहलते बच्चे भी
पबों में नाचती जवानी है तो, सड़कों पर जूझती जिंदगी भी
जीवन की विलासिता है तो, जीवन संघर्ष की कहानी भी
बिसलेरी का पानी है तो, गंदे पानी से चलती जिंदगी भी

ये शहर है किसी के सपनों का, किसी के अपनों का
ये शहर है किसी की बनने का, किसी के बिगड़ने का

ये शहर है किसी की खुशी का किसी के गम का
जीवन के हर रंग से, भरा है ये 'शहर'।

श्री शान्तनु रॉय
कार्यपालक निदेशक
बी ई एम एल लिमिटेड–दिल्ली

बदलाव

सुरेश ने अपनी माँ को आज एक कोने में बैठे हुए देखा और उसने महसूस किया कि उसकी माँ चुपचाप रो रही थी। वो हैरान था कि हमारे घर में किसी भी प्रकार की सुख–सुविधा की कमी नहीं है, भरा पूरा परिवार है, घर में बहु है, पोते हैं। एक बड़ा सा मकान है, माँ को भी तो अलग कमरा दे रखा है, फिर माँ क्यों आज रो रही है। माँ को किसी चीज़ की कमी नही होने देते। दिल बहलाने के लिए मोबाईल दे रखा है ताकि जब मन करें वो अपने सगे संबंधियों से बात कर ले। घर के काम–काज के लिए भी बाई रखी हुई है तथा घर के काम के लिए माँ को कभी परेशान भी नहीं करते हैं। इतनी सुख सुविधाओं के होते हुए भी माँ रो रही है, ऐसा क्यों, यह सवाल बार–बार उसके मन में कौंध रहा था। मन में कोतूहल मचा हुआ था कि जाकर माँ से पूँछ लूँ कि ऐसा क्या हो गया कि वह सुबह–सुबह एक कोने में बैठ कर रो रही है। आज सुबह देर से उठने के कारण ऑफिस जाने में लेट हो रहा था तो सोचा कि अभी ऑफिस चला जाता हूँ शाम को ऑफिस से आने के बाद माँ से पूँछ लूंगा। सुरेश जल्दी से तैयार होकर अपने ऑफिस चला गया। ऑफिस जाते–जाते पत्नी से कह दिया कि जरा माँ का ख्याल रखना, मैंने देखा था कि आज जाने क्यों माँ एक कोने में चुपचाप रो रही थी। पत्नी ने हामी भर दी और सुरेश को लगा कि उसने माँ के लिए अपने कर्तव्य का निर्वाह कर दिया। उसकी पत्नी माँ जी से उनकी उदासी का कारण जान कर कोई न कोई हल अवश्य निकाल देगी। ऑफिस पहुँच कर सुरेश ऑफिस के काम–काज में ऐसा उलझा कि घर की सभी बातों को भूल गया। शाम को छुट्टी के वक्त बॉस ने उसको एक आवश्यक कार्य के लिए रोक लिया और बॉस का काम करते–करते कब 8 बज गए उसे पता ही नही चला। बॉस का काम निपटा कर उसने बॉस को सूचित किया और अपने घर के लिए निकला। दिन भर के काम–काज से इतना थक गया था कि जाते ही हाथ मुंह धोकर खाना खाने बैठ गया और भूल गया कि उसकी माँ उसका इंतजार कर रही है कि बेटा आएगा तो उसके साथ ही खाना खाएगी क्योंकि जब से माँ गाँव से आई है तब से माँ ने खाना बेटे के साथ ही खाया है। खाना खाने के बाद ध्यान आया कि माँ ने खाना नहीं खाया होगा। पत्नी को कहा कि माँ को खाना खिला देना, मैं आज बहुत थक गया हूँ सो मैं सोने जा रहा हूँ। भूल गया कि सुबह माँ रो रही थी और वो कारण भी नहीं जान पाया था। भूल गया कि पत्नी को कह कर गया था कि माँ का ख्याल रखे, भूल गया कि पत्नी से ही पूछ लें कि क्या उसकी माँ जी से कोई बात हुई।

सुरेश की पत्नी ने माँ जी को खाने को कहा तो माँ जी ने मन नहीं है खाने का कह कर खाने से मना कर दिया। उसने भी माँ से ज्यादा खाने की जिद नहीं की। माँ इतने बडे घर में खुद को तन्हा पा रही थी। इसीलिए माँ आज सुबह–सुबह चुपचाप रो रही थी। बच्चों को बता कर उनको परेशान नहीं करना चाहती है ना। घर में बच्चे हैं, बहु है, बेटा है फिर भी क्यों वो अकेलापन महसूस कर रही थी। घर काट खाने को दौड़ रहा था। मन कर रहा था कि यहाँ से भाग जाए और लौट जाए अपने गाँव जहाँ पर उनका पूरा जीवन बीता है। अब बुढ़ापे में पति के गुजर जाने के बाद बेटे ने अपने पास शहर बुला लिया। आज उसकी आँखों के आगे आज से 40 वर्ष पहले का समय दिखने लगा। पहली बार ब्याह करके वो अपने पति राजेश के गाँव आई थी। नई नवेली बहू को सबने कितना मान सम्मान दिया था। धीरे–धीरे उसने अपने व्यवहार से, अपने काम से, अपनी मीठी बोली से सबको अपना बना लिया था। जिसे देखो उसकी शालीनता की ही बातें करता था कि कैसे एक पराए घर से आई लड़की ने सबको अपना बना लिया है। छोटा सा घर था लेकिन उसमें रहने वाले पूरे 10 जीव थे मजाल है किसी के लिए कहीं जगह की तंगी पड़ जाए। सब खुश थे। बहु सबका कितना ख्याल रखती थी। अपनी सासू माँ जो कि अब शायद बुढ़ापे की ओर दस्तक दे चुकी थी और ससुर जी जो कि पारिवारिक जिम्मेदारियां उठाते उठाते जवानी में ही बूढे दिखने लगे थे, का वो खूब ख्याल रखती थी। उन्हें लगता ही नहीं था कि यह कोई पराई लड़की है जो कि वो अपने बेटे के लिए ब्याह के लाए हैं, अपने व्यवहार और सेवा से उसने उनको ऐसा अहसास कराया कि यह तो उनकी अपनी ही बेटी है। दोनों देवर अपनी भाभी को जब देखो किसी न किसी काम के लिए तंग करते रहते थे। लेकिन उसने अपने चेहरे पर कभी शिकन तक नहीं आने दी। पड़ोस में रहने वाले छोटे–छोटे बच्चे जब भी भूख लगती आ धमकते थे कि आंटी जी आंटी जी भूख लगी है कुछ खाने को दो न। उनको भी कितने प्यार से वो अपने पास बुला कर खाना खिलाती थी। अड़ोस पड़ोस और नाते रिश्तेदार सोचते थे कि जरूर राजेश के माँ बाप ने कोई मोती दान किए होंगे जो ऐसी बहु मिली। साल बीतते बीतते सुरेश का जन्म हुआ। सबकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। ससुर जी ने पूरे गाँव के साथ–साथ आस पास के गाँव वालों को भी न्यौता दिया था। कितने खुश थे सभी। फिर सुरेश के जन्म के 2 साल

बाद उसकी बहन रेखा का जन्म हुआ। बच्चों को बड़ा करने में और उनकी पढाई में कब समय बीत गया पता ही नहीं चला।

अचानक सुरेश ने आकर माँ को झकझोड़ा तो उसकी तन्द्रा भंग हुई। ख्यालों से निकलकर यथार्थ में आई तो देखा कि सामने उसका बेटा खड़ा है। माँ माँ आज मेरे बॉस घर खाने पर आ रहे हैं। शाम को जरा ढंग के कपडे पहन लेना और यह गाँव का पहनावा मत पहनना। ढंग के, कैसे ढंग के, क्या यह कपड़े सही नहीं है जिनमें उसकी पूरी जिंदगी निकल गई और बेटा कह रहा है कि जरा ढंग के कपड़े। उसे समझ नही आया कि इनमें क्या बुराई है। अचानक उसे गाँव की याद आ गई जब वो नई–नई दुल्हन बन कर गाँव में आई थी तो उसने परिवार के साथ–साथ वहाँ के रीति रिवाज और परिधानों को भी आत्मसात कर लिया था। सभी कितने हैरान थे कि एक शहर की लड़की गाँव में बिना किसी शिकायत के बिना किसी परेशानी के आराम से रह रही थी। अपने बच्चों को तो पाल ही रही थी, पड़ोस के बच्चे भी कैसे भागे–भागे आते आंटी आंटी चिल्लाते हुए कि कुछ खाने को दो ना अभी मम्मी घर पर नहीं है। वो सबको अपने बच्चों की तरह ही प्यार करती थी। कभी कोई पड़ोसन घर से बाहर जाती थी तो उनके घर की रखवाली और बच्चों की देखभाल उसी के जिम्मे होती थी। आज बेटा कह रहा है कि जरा ढंग के कपड़े पहन लेना। खैर उसने बिना कोई गिला शिकवा किए आज नई साड़ी पहन ली शहर वालों के हिसाब से वर्ना गाँव के हिसाब से तो अलग ही तरीके से पहनी जाती है। तभी सुरेश और उसकी पत्नी आए और कहा कि जरा मार्किट तक हो कर आ रहे हैं, घर का ख्याल रखना। उसको हंसी आ गई। जब से ब्याह कर आई है तब से अब तक यही तो कर रही है। कितना मान सम्मान है गाँव में। लेकिन यहाँ तो बेटा सुबह नौकरी पर चला जाता है। बाई घर की साफ–सफाई कर के चली जाती है। बहु अपने कमरे में, पोता अपने कमरे में मस्त है, एक माँ भी है इस घर में, उससे दो घड़ी बात कर लो, थोड़ा उसके पास बैठ जाओ, थोड़ा उससे बातें कर लो, पर किसी को अपने से ही फुर्सत ही नहीं है तो माँ के पास, सास के पास, दादी के पास कैसे बैठेंगे। हाँ कभी–कभी बेटी रेखा का फोन आ जाता है तो कुछ समय मन हल्का हो जाता है। पर उसको भी घर के काम होते हैं तो बहुत ज्यादा समय वह भी नहीं दे पाती। घरवालों को कुछ भी नहीं पड़ी है कि उनके अलावा कोई और भी है जिसे उनके प्यार की, परवाह की और सानिध्य की दरकार है। तभी घर की बेल बजी तो देखा कि बेटा और बहु आ गए हैं और बहुत सा सामान खरीद कर लाए हैं। बहु तो आते ही शाम की तैयारियों में लग गई, सुरेश के बॉस आ रहे हैं, कहीं कोई कमी न रह जाए। शाम हुई तो सुरेश के बॉस और उनकी पत्नी आ गए। सुरेश ने उनका अभिवादन किया और अपने घर के सभी लोगों का परिचय उनसे कराया। यह बेटा है बी–टेक कर लिया है और एक बहुत बड़ी कंपनी में कार्यरत है तथा बहुत अच्छा पैकेज भी है। बेटी ने एम. बी. ए. कर लिया है। पत्नी पूरे घर को संभालती है और मेरी माँ एक महीना हुआ अभी गाँव से आई है। 6 महीने पहले पिता जी का देहांत हो गया था। इसलिए अपने पास ले आया हूँ। हमारा भी माँ के लिए कुछ फर्ज है, हमारे लिए माँ ने कितना कुछ किया है तो इस बुढ़ापे में हमें उनका ख्याल तो रखना ही है। सभी का परिचय होने के बाद बॉस ने अपना परिचय दिया और बताया कि वो भी एक छोटे से गाँव में पैदा हुए थे और उनका परिवार बहुत गरीब था। बचपन में जब घर में कुछ नहीं होता था तो वो पड़ोस की आंटी के घर जाकर खाना खा कर आ जाते थे। जलपान के बाद काफी बातें उनमें हुई और फिर वो सब खाने की टेबल पर आकर बैठ गए। खाना खाने बैठे तो सभी बैठ गए लेकिन सुरेश की माता जी अपने कमरे में ही थी। बॉस ने कहा कि आप अपनी माता जी को भी बुला लीजिए। पत्नी न चाहते हुए भी माता जी को बुला लाई। सबने खाना खाया और फिर सब एक साथ बैठ गए। लेकिन यह क्या, उन्होंने देखा कि उनके बॉस उनकी माता जी के पास जा रहे हैं। उनकी माता जी कुर्सी पर बैठी थी लेकिन बॉस उनके पास ही जमीन पर उनके पाँवों के पास बैठ गए। उनके पाँव छुए और कहा कि आंटी जी क्या आपने अपने छोटू को नहीं पहचाना। मुझे गाँव में सब छोटू कहते थे। वो काफी बदल गया था सो बॉस ने माँ को याद दिलाया तो माँ भी उन्हें पहचान गई। माँ ने देखा कि उनका वो लाडला सा, छोटू कितना बड़ा हो गया है। वो हमारे ही गाँव में पड़ोस में रहने वाले राम बिहारी अंकल का बेटा था। उनका बचपन बहुत ही गरीबी में बीता था। घर में जब कुछ खाने को न होता था तो यही आंटी उसके पेट की आग बुझाने का काम करती थी। वो बहुत खुश था और सुरेश को बार–बार कह रहा था कि आंटी के पैरों में जन्नत है। आज वो जहाँ भी है उन्हीं के आर्शीवाद से है। अगर उन्होंने उनके पिता जी को उसे घर का खर्चा चलाने के लिए मजदूरी करने से न रोका होता तो आज वो भी मजदूर ही होता। आपकी माता जी ने ही मेरे पिता जी को कहा था कि इसके खाने–पीने की चिन्ता न करें। बस इसको मन लगाकर पढ़ने दें। मेरे पिता जी आपकी माता जी की बात मान गए और आज मैं इस मुकाम पर हूँ। सुरेश की खुशी का कोई ठिकाना नही रहा। वो अब भी बस अपने बारे में सोच रहा था कि अब बॉस बहुत प्रसन्न होंगे और उसकी तरक्की

जरूर होगी। इतने में बॉस ने कहा कि अब आप सबको भी हमारे घर आना है और माँ जी को भी साथ लाना।

समय बीतता गया और तय समय तय दिन पर सुरेश अपने परिवार के साथ अपने बॉस के घर पहुँचा। माता जी भी साथ में थी। उनके बच्चे दौडे–दौडे आए और सबका स्वागत किया। उनकी पत्नी ने भी सबका अभिवादन किया। बच्चे माता जी के साथ दादी–दादी कह कर लिपट गए और उन्हें अपना घर दिखाने के लिए ले गए। यहाँ भी सबके लिए अलग–अलग कमरे थे लेकिन सुरेश की माता जी को यहाँ का माहौल बहुत बदला बदला लग रहा था। कमरे सबके अलग–अलग थे लेकिन खुले सबके लिए थे जबकि सुरेश के यहाँ तो बच्चे अगर एक दूसरे के कमरे में चले गए तो समझो महाभारत होनी ही है। यहाँ बच्चे सबको कितना प्यार दे रहे हैं। यह देखो दादी, मम्मी ने आपके यहाँ से आने के बाद आपकी तस्वीर बनवाई है। देखो कितनी सुंदर लग रही है। बीच में आपकी तस्वीर, फिर मम्मी पापा की और साईड में मैं और दीदी। दादी आप हमारे यहाँ क्यों नहीं रहती। हम अब आपको जाने नहीं देंगे। दीदी अलग झगड़ने लगी कि दादी मेरे साथ रहेंगी। उनके बॉस आए और कहा कि लड़ो मत दादी जी का जहाँ मन करेगा वो वहीं रहेंगी। थोड़ी देर में उनके पड़ोस से भी कई लोग आ गए। वो सब भी बच्चों की दादी को देखने आए थे क्योंकि सुरेश के बॉस ने सबको बताया था कि जिनके कारण वो आज इस मुकाम पर है वो आज उनके घर आने वाली है। सुरेश के बॉस और उनकी पत्नी का अड़ोस–पड़ोस में बहुत मिलना जुलना था और सभी के बच्चे आपस में बहुत घुले मिले हुए थे। सभी दादी को बार–बार नमस्कार कर रहे थे। खाना सबने मिलकर खाया और खूब हंसी मजाक हुआ। आखिर सुरेश ने अपने बॉस से जाने की आज्ञा मांगी तो बॉस ने कहा कि माता जी को हमारे यहाँ छोड़ जाओ। माता जी ने कहा कि वो अभी जाना चाहती हैं और आना–जाना तो लगा ही रहेगा। माता जी से फिर आने का वादा लेकर बड़ी मुश्किल से बॉस और बच्चों ने आने दिया।

आज सुरेश को अपराधबोध महसूस हो रहा था। उसे रह–रह कर माँ की कुर्बानियाँ याद आ रही थी। मेरे साथ–साथ औरों की भी पालनहार थी उसकी माँ। लेकिन माँ को एक कमरा देकर वो समझता था कि उसने अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी कर ली है। अपने बॉस और उनके बच्चों का उनके प्रति व्यवहार देख कर, खास कर माता जी के प्रति उनका व्यवहार देख कर उसको अपने ऊपर ग्लानि होने लगी कि कहाँ उसने अपने बच्चों को ऐसे संस्कार देने में कमी कर दी और वो खुद भी कहाँ अपनी माँ को अबतक समझ पाया था। आज उसको माँ का वो चुपचाप रोना याद आ रहा था, अपने पर आत्मग्लानि भी हो रही थी कि वो उनसे उनके दुःख सुख भी नही बांट सका। उसकी पत्नी भी अपने किए पर पछता रही थी जबकि उसने उनसे कोई बुरा वर्ताब नही किया था लेकिन हमारे बुजुर्गों को आखिर हमसे क्या चाहिए सिर्फ प्यार ही न, तो वो उनको वही न दे सके थे। आज उनमें बहुत बदलाव आ गया था। घर के हर काम में वो अब माँ की सलाह ले रहे थे। उनके साथ समय बिता रहे थे। उनसे गाँव की, अपने बचपन की, माँ की शादी के बाद के दिनों की बात और बॉस के बचपन की बातें कर रहे थे। बॉस की तरह और भी बच्चे माँ के पास पानी पीने, खाना खाने आते रहते थे, उनकी भी बातें कर रहे थे। बच्चे भी पास आकर बैठ रहे थे और उनके कमरों के दरवाजे अब बंद नहीं हो रहे थे। अब उन्हें गेम, इंटरनेट और बंद कमरा नहीं, दादी, मम्मी पापा चाहिए थे। अड़ोस पड़ोस में उठना बैठना शुरू कर दिया था। अब सभी पड़ोसी भी सुरेश के परिवार को जानने लग गए थे और सभी के बच्चे आपस में घुलमिल गए थे। सुरेश अपने बॉस का मन ही मन बहुत शुक्रिया अदा कर रहा था जिनके कारण आज उसके घर में, जीवन में इतना बड़ा और महत्वपूर्ण बदलाव आया था जिसने उनके घर का माहौल बदल दिया और उनकी जिंदगी भी।

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक–राजभाषा
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
दिल्ली

> "उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।"
>
> – **शारदाचरण मित्र**

“जाने क्यूँ सब सहती है”

बड़े जतन से पाला मुझको, खूब प्यार दुलार दिया,
जब भी मैंने उड़ना चाहा, जाने क्यूँ मुझे जकड़ लिया,
यह कैसा था प्यार? ये उलझन मन में मेरे तब से है,
क्या लड़की होना ही काफी है? प्रश्न ये मेरा सबसे है।
उम्र कोई भी रही हो उसकी इससे फर्क कहाँ पड़ता है,
दस वर्ष की आयु में भी तो, उसको माँ बनना पड़ता है...
तब भी मैंने माना था, ये बात आज भी वैसी है,
ना जाने कब धुंध हटेगी... जाने क्यूँ सब सहती है।।

कहते सब हैं, बदल गया है जीवन अबला नारी का,
नहीं सुरक्षा उसकी जग में, यह कैसा बदलाव हुआ?
देश चलाया था उसने भी, यान उड़ा कर दिखा दिया,
ऊँचे–ऊँचे पर्वत लाँघे, इंग्लिश चैनल पार किया,
खेल जगत में धाक जमाकर, देश का गौरव नाम किया,
बड़ी कंपनी की सीईओ, सेना में भी काम किया,
नहीं कोई भी क्षेत्र है ऐसा, जिसमे पीछे रहती हैं,
ना जाने क्यूँ फिर भी अपने घर में छिपकर (सहमी) रहती है।
तब भी मैंने माना था, ये बात आज भी वैसी है,
ना जाने कब धुंध हटेगी... न जाने क्यूँ सहती है।।

ब्याह किया.. फिर जता दिया, अब जीवन तेरा उस घर में,

अबला नहीं हो सबला हो तुम पाठ पढ़ाया ये सब ने,
संस्कारों की लाल चुनरियाँ, मेरे सर पर डाली थी,
कहाँ पता था मुझको उसकी कीमत किसने भरी थी।
आदर्शों की लिए धरोहर, उस देहली को छोड़ा था,
लाज शर्म और मर्यादा का, पहना मैंने जोड़ा था।
सब उम्मीदें मुझसे ही क्यूँ ? क्यूँ बंधन में रहती है,
ना जाने कब धुंध हटेगी... जाने क्यूँ सब सहती है।

मात–पिता को सास ससुर में देखा करती हर दिन में,
भाई जैसा जेठ को जाना, सखा बना देवर घर में।
ननदें मानी बहिन सरीखी, सबकी खूब चहेती हूँ,
फिर भी मन में प्रश्न है मेरे, क्या इस घर की बेटी हूँ?
सब रिश्ते अपनाती वो ही, सबको प्यार वो देती है,
ना जाने कब धुंध हटेगी... जाने क्यूँ सब सहती है।।

कहते है भगवान बसेंगे, जहाँ पूज्यनीय नारी हो,
बड़ी–बड़ी बातें ये कैसी? जैसे कोई कहानी हो।
घर आँगन और देश विदेश में बेटी बनकर नाम किया,
पर क्या सच है? हमने उसका सच्चे दिल से सम्मान किया?
चाहा नहीं था पूजो उसको मंदिर और देवालयों में,
केवल रक्षा, सम्मान करो हर नारी का घर आँगन में।
नहीं डरेगी अपने घर में जैसे अब वो डरती है
ना जाने कब धुंध हटेगी... जाने क्यूँ सब सहती है।।

राजुला सक्सेना
मुख्य प्रशासनिक अधीक्षक
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

“न ठहर बस बढ़ता चल”

हार के पीछे जीत छुपी है
तेरे कर्मों पे तेरी तकदीर टिकी है।
हिम्मत न हार बस आगे बढ़
हर रात के पीछे सुबह खड़ी है।

रख हौसलों में इतना दम
के दुखों की कमर तोड़ दे।
जिस पथ पे कांटे हो बिछे
उस पथ पे कलियां बिखेर दे।

न बाल बांका कर सके
तेरा कोई कहीं कभी।
तू ऐसी एक चट्टान बन
जो शत्रुओं का रास्ता रोक दे।

तू याद बस अपना लक्ष्य रख
बनके अर्जुन तरकश अपना तैयार रख।
जिंदगी की रुकावटों को
अपने हित में लेके चल।

न मिले जीत कोई बात नहीं
अपनी हार से सीख लेके चल।

जीवन एक परीक्षास्थल है
यहाँ कोई उत्तीर्ण तो कोई विफल है।
तेरी हार में भी जीत है
एक तजुर्बा, एक विश्वास है।
तू फिर से उठ और कोशिश कर
बढ़के आगे अपनी जीत हासिल कर।।

मधु सेठी
मुख्य वित्त अधीक्षक
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

“लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया”

हर इंसान को चाहिए जिंदगी में राग–रंग,
गुजरते हैं दिन, हफ्ते, महीने, लेकर नवरंग।
पौष माघ की सर्दी के बाद फागुन लाता है होली,
बस उसके बाद तो जैसे त्योहारों की छुट्टी होली।

झेल के ज्येष्ठ आषाढ़ की गर्मी, सावन के बाद भादो आ गया,
लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया।।

रक्षाबंधन ने शुरुआत कर के, हर घर को पवित्र बना दिया,
घर–घर में पवित्र प्रेम का रस मेरे कान्हा ने बरसा दिया।
घर में प्रेम और पवित्रता होगी, तभी तो गणेश आते हैं,
अपने साथ पीछे–पीछे वो नौ देवियां भी लाते हैं।

घर को पुतवाने का देखो वक्त आ गया,
लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया।।

देवी के आगमन पर ही शक्तियां मन में भर जाती हैं,
तभी तो अंदर बैठे रावण का मन की शक्ति वध कर पाती है।
मन में बैठे विकारों रूपी रावण को मारकर ही दशहरा मनाते हैं,
अंधेरे मन में प्रभु प्रेम की ज्योति जला कर ही सच्ची दिवाली मनाते हैं।

मन वचन और कर्म को दिव्य करने का समय आ गया,
लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया।।

मन में कोई विकार ना बाकी होगा तभी लक्ष्मी आएंगी,
अपने साथ वो घर में रिद्धि–सिद्धि और धन भी तो लाएंगी।
हर त्यौहार को मनाने के पीछे छिपा है गहरा राज,
समझ जाओगे तो होगा जीवन में खुशियों का आगाज।

त्योहारों के महत्व को समझने का वक्त आ गया,
लो फिर से त्योहारों का मौसम आ गया।।

हरि ब्रह्मा भाटिया
सहायक प्रबंधक (अशोक समारोह)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड

गंगा महिमा

मोक्षदायनी गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखा है...

"गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सूला।।

भावार्थ गंगाजी समस्त आनंद–मंगलों की मूल हैं। वे सब सुखों को करने वाली और सब पीड़ाओं को हरने वाली हैं।

गंगा सुंदर, अविरल नदी मात्र नहीं है, बल्कि यह भारत का इतिहास, गौरव और पहचान है। धार्मिक ग्रंथों और साहित्य में इनकी प्रशंसा, महिमा और गौरव का श्रद्धापूर्वक वर्णन देखने को मिलता है। अपने पवित्रता, सौंदर्य और महत्ता के कारण इनकी अमर गाथा से जन–जन परिचित है। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से गंगा की महानता अतुलनीय है। धर्मशास्त्रों के अनुसार, गंगा ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की दशमी तिथि को स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। ऐसी मान्यता है कि महाराज सागर के वंशज राजा भागीरथ अपने 60 हजार शापित पूर्वजों के उद्धार एवं लोक कल्याण हेतु महादेव की आज्ञा से गंगा जी को स्वर्ग से उतारकर धरती पर प्रवाहित कराया। मनुस्मृति के अनुसार दस इंद्रियों से होने वाले दस तरह के पापों को हरने के कारण गंगा–अवतरण को गंगा दशहरा भी कहा जाता है।

भारत राष्ट्र के कीर्तिध्वज, कल्याण मूर्ति मां गंगा का उद्‌गम उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में समुद्र तल से लगभग 7010 मीटर की ऊँचाई पर पर्वतराज हिमालय में गोमुख नामक स्थान से होता है। गोमुख में गंगोत्री ग्लेशियर से नीचे की ओर बहती हुई गंगा मन्दाकिनी, धुली गंगा और पिंडर जैसे कई धाराओं से जुड़ती है। देवप्रयाग में अलकनंदा से मिलकर ऋषिकेश होते हुए मैदानी (समतल) भूमि में हरिद्वार में गंगा की अविरल धारा उतरती है। मोक्षदायनी गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार झारखंड और पश्चिम बंगाल को सींचते हुए 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती है और अंत में बंगाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है। गंगा नदी का वेसिन सबसे बड़ा है जो कि 8,61,452 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है जो देश के कुल भोगोलिक क्षेत्र के एक चौथाई (26.30%) से अधिक है तथा 43% जनसंख्या का पालन–पोषण करता है। गोमुख से समुद्र पर्यंत बहने वाली गंगा की मुख्य सहायक नदियां यमुना, रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक, सोन, कोसी और महानंदा हैं।

भारत के अनेक धार्मिक ग्रंथों यथा रामायण, महाभारत, गीता, रामचरित मानस, पुराणों, अनेकानेक काव्यों एवं लोकगीतों में अविरल पतितपावनी गंगा की महिमा का विस्तारपूर्वक गुणगान किया गया है। महाकवि कालीदास ने "रघुवंश' में गंगा और यमुना के संगम का अत्यंत ही मनोहारी वर्णन किया है। गंगा को लक्ष्य करके अनेक भक्ति ग्रंथ लिखे गए हैं जिसमे 'गंगा आरती' सबसे लोकप्रिय है। अनेक लोग अपने दैनिक जीवन में श्रद्धा के साथ इनका प्रयोग करते हैं। गंगाजल की पावनता, पवित्रता, रोगनाशक क्षमता आदि दिव्य गुणों के कारण गंगा पुण्यतोया, जगजननी, विश्वम्भरा, गंगामाता, मोक्षप्रदायिनी, सुरेश्वरी, देवनदी, स्वर्गापगा, विष्णुपदी आदि नामों से विभूषित है। विशेषज्ञों के अनुसार गंगाजल में 1100 प्रकार के बैक्टीरियोफेज पाए जाते है, जिसके कारण गंगाजल में सड़न नहीं होता और जल स्वच्छ और शुद्ध बना रहता है। बहुत से पवित्र तीर्थस्थल गंगा नदी के किनारे बसे हुए हैं, जिसमें वाराणसी, हरिद्वार, प्रयागराज और उत्तरकाशी प्रमुख है। गंगा नदी को अत्यंत पवित्र माना जाता है एवं यह मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सारे पापों का नाश हो जाता है। मरने के बाद गंगा में अस्थियाँ विसर्जन करना मोक्ष प्राप्त करने के लिए आवश्यक समझते हैं।

गंगा अपनी घाटियों में भारत के कृषि आधारित आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करती है। यह अपनी सहायक नदियों सहित बहुत बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई के स्रोत हैं। साथ ही, असंख्य जीव–जंतुओं, पेड़–पौधे का पालनहार है। इनके तट पर ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर कई पर्यटन स्थल हैं, जो आय, रोजगार और अन्य सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों हेतु अत्यंत लाभकारी हैं। इनके तटों पर अनेक प्रसिद्ध मेलों, मकर संक्रांति, कुंभ आदि का आयोजन किया जाता है और अनेक प्रसिद्ध मंदिर गंगा के तट पर ही बने हुए हैं।

पतितपावनी गंगा को प्रदूषण मुक्ति करने हेतु समय–समय पर केंद्रीय स्तर पर गंगा कार्य योजना, केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण, राष्ट्रीय गंगा विकास घाटी प्राधिकरण और नमामि गंगे जैसे प्रयास और संत–महात्माओं, विद्वजनों और आम–जनों के प्रतिबद्धता से गंगा जल निर्मल कर जनजीवन को सुखी और समृद्ध करने के निरंतर प्रयास जारी है। जन जागरूकता हर समस्या का एक बड़ा हल है। माँ गंगा की स्तुति के साथ हम सबको संकल्प लेना होगा कि नदियों के जल ग्रहण क्षेत्र में प्रदूषण को रोकने, इसके पर्यावरणीय प्रवाह को बनाए रखने तथा सार्थक जल संरक्षण उपायों तथा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन करने में हर संभव प्रयास और योगदान करेंगे।

प्रवीण कुमार झा
सहायक महाप्रबंधक (भर्ती)
भारत संचार निगम लिमिटेड,
निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

“बाप रे”

वो पल वो सुकुन वो एहसास वो क्या समा था।
जब मैं बाप बना था।
मेरा मन मेरा तन मेरी रूह मेरे अंग का हिस्सा था।
जब मैं बाप बना था।
कभी सर कभी अंगुली कभी कंधा तो कभी पीठ पर बिठाया था।
जब मैं बाप बना था।
कभी दिन कभी रात कभी शाम कभी सुबह उसको सुलाया था।
जब मैं बाप बना था।
कभी सैर कभी झुला कभी गुब्बारा कभी पतंग उठाया था।
जब मैं बाप बना था।
वो समझ वो बुझ वो पहनावा वो अनुशासन सिखाया था।
जब मैं बाप बना था।
कभी खुशी कभी गम कहीं हंसी तो कहीं रंज का रंग दिखलाया था।
जब मैं बाप बना था।

वो रीत वो रिवाज वो सम्मान वो परवरिश दी थी।
जब मैं बाप बना था।
वो लगन वो शिक्षा वो एहमियत वो इंसनियत का पाठ दिया था।
जब मैं बाप बना था।
वो आदर निरादर मिलन जुदाई अपने पराए की सीख दी थी।
जब मैं बाप बना था।
अपनों का साथ परिवार नजदीकियाँ मन गहराई जतलाई थी।
जब मैं बाप बना था
पर अब वक्त का ये आलम है, जिंदगी नासूर बन गई है।
अपने पैरों पर खडे होने की जिद्द अपनी जिंदगी संवारने की दौड़,
कुछ कर गुजरने की मंशा कहां ले गई उसे जुदा कर गई।
उससे मैं बेबस लाचार हूं, मजबूर हूं।
दिखाता रहा खुशी का एहसास पर रह गया अकेलापन, तंहाई
बाप रे! तू क्यूँ बाप बना।

रजनीश बनकर
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
नेशनल शेडयूल्ड कास्टस फाइनेंस
एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी)

“व्यथा हिंदी की”

अरे बहन, कहाँ जा रही हो,
इतना सजधज कर।
माथे पर इतनी बड़ी बिंदी लगाए,
और हाथों मे पूजा की थाली लिए,
तुम्हारे घर के दरवाजे पर,
ये वंदनवार कैसा।

हाँ सखी, सच कहूँ, बहुत खुश हूँ मैं,
आज तो, मेरे पाँव धरती पर टिक ही नहीं रहे,
मेरे बच्चे जो आ रहें हैं, मेरे पास, अपने घर।
पूरे साल, इंतजार रहता है, मुझे इन दिनों का,
तुम्हें पता है, मेरे बच्चे बहुत बड़े अफसर बाबू बन गए हैं,

बस, साल में, एक बार ही आना हो पाता है,
पर जब आते हैं, तो मुझे देते हैं, पूरा सम्मान।
अपने संग ले जाते हैं मुझे सभा–समारोहों में,
मैं भी तो लूटा देती हूँ, पूरी जमा–पूँजी, उन पर।

सच कहूँ सखी, तुम बहुत किस्मत वाली हो,
जो तुम्हारे बच्चे रहते हैं, संग तुम्हारे।
और मुझे देखो, अपने आंगन में, उनके आने से,
पखवाड़ा–भर के लिए, मिलती खुशियों के इंतजार में,
बूढी होने लगी हूँ मैं, अब।

उन्हें शायद पता नहीं,
उनकी जीवन–शैली में भी, ढल जाऊंगी, मैं।
अच्छा चलती हूँ, मेरे बच्चे आते ही होंगें,

बस, तुम यह दुआ करना,
के इस बार, मेरे बच्चे आएँ
कभी न जाने के लिए।

रजनी मोंगिया
प्रबंधक (मानव संसाधन)
नेशनल शेडयूल्ड कास्टस फाइनेंस
एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी)

“भारतेंदु और द्विवेदी ने हिंदी की जड़ पाताल तक पहुँचा दी है;
उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा।”

– **शिवपूजन सहाय**

“हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा”

इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,
मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...

बहुत हुआ बातों का मसौदा, खत्म करो बाँटने का सौदा,
इस बंजर हो चुकी धरती में फिर से रवानगी को भरना होगा...

इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,
मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...

जाति–धर्म के थपेड़ों से बट रही धरती हमारी,
मानवता की शोषण से निष्प्राण हुई आशा हमारी,

नारी के सम्मान के खातिर इन दुराचारियों से लड़ना होगा।
इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,

मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...
कहा खो गया वैभव हमारा, क्यों धूमिल हुआ अभिमान हमारा,
इस पर विचार करना होगा..

चंद्रयान को सफल बनाया मंगल पर कदम रखना होगा,
और विश्वगुरू के सपने को फिर से साकार करना होगा...

इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,
मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...

संसार को दिशा देने वाली कहां खो गई भारतीयता हमारी,
अनेकता में एकता के विश्वास को जीवन में भरना होगा...

इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,
मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...

कहा गया बच्चों का बचपन, क्यूं भूल गए बचपन की लीला, क्यूं टूट गए मिट्टी के बरतन, क्यूं बदल
गया जीवन का दर्पण, सफलता के बोझ में क्यूं खो गया जीवन का सुखपन,

इस कृष्ण रूपी लीलाओं में फिर से रंगों को भरना होगा।
इस हिंद देश के नवनिर्माण में सबको आगे बढ़ना होगा,
मातृभूमि की सेवा में कदम मिलाकर चलना होगा...

पकंज
कनिष्ठ कार्यपालक
नेशनल शेडयूल्ड कास्टस फाइनेंस
एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी)

“हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है।”

– (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली सचिवालय

अध्यक्ष	संरक्षक	मार्गदर्शक	सदस्य–सचिव
श्री संजीव कुमार, भा.प्र.से. अध्यक्ष, भाविप्रा	**डॉ. एच. श्रीनिवास, भा.रे.का.से** सदस्य (मानव संसाधन), भाविप्रा	**एस. स्वामीनाथन** कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), भाविप्रा	**संजीव कुमार** **संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)**

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड इस्पात भवन, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री कृष्ण कुमार सिंह** निदेशक (कार्मिक)	 **श्री राजेश शर्मा** उप महाप्रबंधक(कार्मिक–राजभाषा)
हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड-मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय-रिटेल 8वीं मंजिल, कोर–2, स्कोप मीनार, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 **श्री अविनाश जैन** महाप्रबन्धक(प्रभारी)–रिटेल	 **रमेश चंद** मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड स्कोप काम्प्लेक्स, कोर–8, छठीं मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री एम आर सिनरेम** प्रबंध निदेशक	 **श्री संजय कुमार** सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
हिन्दुस्तान प्रीफैब लिमिटेड जंगपुरा (हाउसिंग फैक्टरी), नई दिल्ली–110014		
एम.एम.टी.सी. लिमिटेड कोर–1, स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली–1110003	 **श्री हरदीप सिंह** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)	 **सुश्री मधुलिका मिश्र** प्रबंधक(राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण निगमित मुख्यालय राजीव गाँधी भवन, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 **श्री संजीव कुमार** भा.प्र.से. अध्यक्ष	 **श्री संजीव कुमार** संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)
बामर लारी एंड कंपनी लिमिटेड एन आर ओ, प्रथम तल, एन बी सी सी केंद्र, प्लाट नं 2, ओखला फेज–1, नई दिल्ली–110020	 **श्री अशोक कुमार गुप्ता** उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) – उत्तरीय क्षेत्र	 **डा. राघवेंद्र कुमार शर्मा** वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा एवं प्रशासन)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड- उद्योगक्षेत्र एकीकृत कार्यालय परिसर, इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003	 **जितेन्द्र दास** कार्यपालक निदेशक	 **रियाजुद्दीन** राजभाषा नोडल अधिकारी एवं संयोजक

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
नेशनल शेडयूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन स्कोप मीनार, 14वीं मंजिल, कोर–1 व 2, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 **श्री रजनीश जैनव** अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक (कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष)	 **श्री रजनीश बनकर** समप्र (राजभाषा)
पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ऊर्जानिधि 1, बाराखंबा लेन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001	 **श्री परमिंदर चोपड़ा** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री योगेन्द्र कुमार खंडूजा** विभागाध्यक्ष (राजभाषा)
भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड ईसीई हाउस, 28–ए, कस्तूरबा गोधी मार्ग, नई दिल्ली –110001	 **श्री निखिल कुमार सिंह** मुख्य महाप्रबंधक समन्वयन	 **राजकुमार महतो** सहायक प्रबंधक राजभाषा
पवन हंस लिमिटेड सी–14, सैक्टर–1, नोएडा–201301 (उत्तर प्रदेश)	 **संजीव राजदान** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **रीना गुप्ता** स्था. विभागाध्यक्ष (मासंएवंप्रशा)
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र स्कोप मीनार, कोर–2, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092	 **श्री अभिजीत कुमार** मुख्य महाप्रबन्धक(विक्रय) एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक	 **सुश्री मीना रानी नायक** वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड दीनदयाल ऊर्जा भवन, 5, नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070	 **श्री के. जी गोयल** कार्यकारी निदेशक – मुख्य समन्वय	 **सुश्री संजय वती** वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड महानगरदूरसंचार सदन, 9, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री पी के पुरवार** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री लक्ष्मी प्रसाद** उप प्रबन्धक (राजभाषा)
गेल इंडिया लिमिटेड 16, भीकाजी कामा प्लेस, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110066	 **श्री संदीप कुमार गुप्ता** अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	 **श्री पी. नागेन्द्र** मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड-कार्पोरेट कार्यालय बीएचईएल हाउस, सीरी फोर्ट, नई दिल्ली–110049	 **श्री एम इसादोर** कार्यपालक निदेशक(मानव संसाधन)	 **सुश्री चन्द्रकला मिश्र** अपर महाप्रबन्धक (राजभाषा)
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स(इंडिया) लिमिटेड स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर–3, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री संजय गोयल** समूह महाप्रबंधक	 **डॉ. अहीर प्रभुनाथ** कार्यकारी(एस.जी.) (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड कॉनकॉर भवन, सी–3, मथुरा रोड, अपोलो अस्पताल के सामने, नई दिल्ली – 110076	 **श्री संजय स्वरूप** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री रविप्रकाश चतुर्वेदी** मुख्य राजभाषा अधिकारी
इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी लिमिटेड (इरेडा) तीसरा तल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली – 110066	 **श्री प्रदीप कुमार दास** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **सुश्री संगीता श्रीवास्तव** प्रमुख प्रबन्धक (राजभाषा)
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड कोर–2,स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली	 **डॉ. तापस कुमार पट्टनायक** कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)	 **श्री विजय कुमार शर्मा** वरिष्ठ हिंदी अधिकारी
हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड स्कोप मीनार, दूसरा तल, कोर–2, नार्थ टावर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 **श्री जसवंत कुमार राजौरा** सहायक महाप्रबंधक	 **श्री अशोक कुमार पाण्डेय** कनिष्ठ प्रबन्धक
एनटीपीसी लिमिटेड एनटीपीसी केंद्रीय कार्यालय ईओ सी सेक्टर –24, नोएडा	 **श्री गुरदीप सिंह** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री अतरसिंह गौतम** उप महाप्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
केन्द्रीय भंडारण निगम-निगमित मुख्यालय 4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–110016	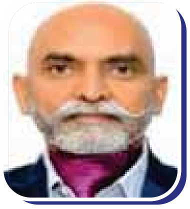 **श्री अमित कुमार सिंह** प्रबंध निदेशक	 **श्रीमती नम्रता बजाज** सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड सी–4, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, साकेत, नई दिल्ली–110017	 **श्री बृजेश कुमार गुप्ता** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री अभिजित कुमार सिन्हा** मुख्य महाप्रबंधक/वित्त/मुराधि
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ब्लॉक–2, छठा तल, प्लेट ए, एनबीसीसी बिल्ड़िंग, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023	 **संजय कुमार** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्रीमती रुचिरा चटर्जी** समूह महाप्रबंधक/प्रशासन एवं सुरक्षा
नेशनल टेक्सटाइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड कोर–4, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री आशुतोष गुप्ता** अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	 **श्री गौरव राठोड़** सहायक प्रबंधक (एचआर/जीए/राजभाषा)
इंडियन रेलवे कैटरिंग व टूरिज्म कॉर्पोरेशन लिमिटेड, निगम कार्यालय बी–148, 12वन तल, स्टेट्समैनहाऊस, बाराखंबारोड, नई दिल्ली–110 001	 **सीमा कुमार** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **संजय प्रियदर्शम** मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं समूह महाप्रबंधक/रेल नीर

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
भारतीय होटल निगम लिमिटेड सेन्टॉर होटल परिसर, इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, नई दिल्ली–110037	 **दीपक खुल्लर** मुख्य कार्यपालक अधिकारी	 **राजन औतार मंधार** राजभाषा अधिकारी
दि स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड जवाहर व्यापार भवन, टॉलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली–110001	 **श्री एस. के. मीणा** संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)	 **डॉ. जगदीश प्रसाद** मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण-उत्तरी क्षेत्र मुख्यालय नवीन विमान यातायात सेवा परिसर, इन्दिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110037	 **श्री जे एस बलहारा** क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक	 **श्री सूर्यभान गौतम** संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम (एनएमडीएफसी) प्रथम तल, कोर 1, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, दिल्ली–110092	 **श्रीमती आभा रानी सिंह** आईआरएस, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	 **श्री पी.एस.पवनीकर** उप महाप्रबंधक(मासंप्र एवं प्रशा./राभा)
एम.एस.टी.सी. लिमिटेड पता–30/31ए, पहली मंजिल, जीवन विकास भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, दिल्ली–110006	 **श्रीमती शालिनी भट्टी** क्षेत्रीय प्रबन्धक	 **श्री प्रतीक साव** सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
बी.ई.एम.एल. लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय, ईएफजीएच, 'वंदना' बिल्डिंग, 11वीं मंजिल, टॉलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली –110001	 **श्री रणवीर सिंह चोपड़ा** क्षेत्रीय प्रबंधक	 **श्री रमेश चन्द्र शुक्ल** वरिष्ठ प्रबन्धक (प्रभारी–राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड - निगम कार्यालय 403, बीएसएनएल भवन, हरीशचन्द्र माथुर लेन, जनपथ, नई दिल्ली–110001	 **श्री अधीर सिंघल** प्रधान महाप्रबंधक (कार्मिक)	 **सुश्री अपर्णा सेन** राजभाषा अधिकारी
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - क्षेत्रीय कार्यालय विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र, एनबीसीसी प्लाजा, चतुर्थ टॉवर, चौथा तल,सैक्टर–5, पुष्प विहार, साकेत, नई दिल्ली–110017	 **श्री संजय गर्ग** महाप्रबंधक(विपणन) एवं क्षेत्रीय प्रबंधक(उत्तर)	 **श्री ए. एस. मित्तल** महाप्रबंधक (विपणन)
मेकॉन लिमिटेड स्कोप मीनार, नार्थ टावर, 13वांध15वां तल, लक्ष्मी नगर व्यावसायिक केन्द्र, दिल्ली–110092	 **श्री उमेश कुमार विश्वकर्मा** कार्यपालक निदेशक एवं (कार्यालय)	 **श्री पंकज श्रीवास्तव** वरिष्ठ महाप्रबंधक (विद्युत)
ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड 18ए, शहीद जीत सिंह मार्ग, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–110016	 **श्री नाबारुण रॉय** कार्यपालक निदेशक, उ.क्षे.भा.प्रे.के.	 **श्री मनीष कुमार सिंह** उप–प्रबन्धक (मानव संसाधन)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड 1, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066	 **सुश्री वर्तिका शुक्ला** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री नगेंद्र कुमार मिश्रा** उप महाप्रबन्धक
नालको - उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय कोर–4, 5वां तल, साउथ टॉवर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली–110092	 **डॉ. प्रद्युम्न कुमार प्रधान** कार्यपालक निदेशक (निगम कार्य)	 **श्री विद्या शंकर सिंह** महाप्रबंधक मानव संसाधन व प्रशासन
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स(इंडिया) लिमिटेड, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय 5वां तल, स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर–3, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 **श्री मुकेश ठाकुर** समूह महाप्रबंधक/प्रभारी उत्तरी क्षेत्र	 **रविंदर कुमार** वरिष्ठ प्रबंधक–मानव संसाधन
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड-उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय छठा तल, ब्लॉक–3, दिल्ली आई टी पार्क, शास्त्री पार्क, नई दिल्ली	 **सुश्री विजयालक्ष्मी कौशिक** कार्यपालक निदेशक	 **श्री सी एल भारद्वाज** सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन/राजभाषा)
कार्यालय विमानपत्तन निदेशक सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 **चन्द्र प्रताप द्विवेदी** विमानपत्तन निदेशक	 **राकेश रंजन कुमार सिंह** सहायक प्रबंधक(रा.भा.)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
आई आर सी टी सी उत्तर क्षेत्र कार्यालय नई दिल्ली रेलवे स्टेशन परिसर जिन्जर रेल यात्री निवास बिल्डिंग, अजमेरी गेट	 **श्री अजीत कुमार सिन्हा** (इंडियन रेलवे ट्रैफिक सर्विस) समूह महाप्रबंधक आई आर सी टी सी (उत्तरी क्षेत्र)	 **श्री मानवेन्द्र प्रताप सिंह राघव** अपर महाप्रबंधक(पर्यटन एवं राजभाषा अधिकारी) आई आर सी टी सी (उत्तरी क्षेत्र)
कार्यपालक निदेशक रेडियो निर्माण एवं विकास एकक एकीकृत प्रशासनिक एकक, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 **श्री सोरन सिंह** कार्यपालक निदेशक (एफ आई यू)	 **श्रीमती पुष्पलता** सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
एनएमडीसी लिमिटेड पंचम तल, प्लेट–सी, एनबीसीसी टॉवर, ऑफिस ब्लॉक–2, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023	 **श्री सोमनाथ आचार्य** उप महाप्रबंधक(कार्मिक) एवं क्षेत्रीय प्रमुख	 **अजय कुमार** नोडल अधिकारी

"हिंदी ने राष्ट्रभाषा के पद पर सिंहानसारूढ़ होने पर
अपने ऊपर एक गौरवमय एवं गुरुतर उत्तरदायित्व लिया है।"

– गोविंदबल्लभ पंत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम-1) दिल्ली की 56वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की 56वीं बैठक एवं राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन संबंधी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन 23 जनवरी, 2023 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अधिकारी संस्थान, सफदरजंग हवाईअड्डा, नई दिल्ली में किया गया। इस बैठक में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी सदस्य कार्यालयों से कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान, सदस्य कार्यालयों द्वारा जुलाई–दिसंबर, 2022 अवधि के दौरान किए गए राजभाषा कार्यान्वयन के आधार पर कुल 04 सदस्य कार्यालयों को श्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार प्रदान किए गए और अक्तूबर–दिसंबर 2022 के दौरान 06 सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों से प्राप्त जुलाई–दिसंबर, 2022 अवधि की हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई।

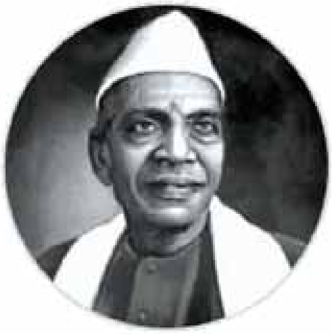

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है.

– मैथिलीशरण गुप्त

विश्व हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाईअड्डा नई दिल्ली – 110 003
वेबसाइट : www.aai.aero